ऋग्वेद	यजुर्वेद

ओ३म्

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15

वर्ष : 27 भाद्रपद-आश्विन वि०स० 2072 सितम्बर 2015 अंक : 09

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

ओ३म् भूर्भुव स्वः।
तत् सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ

1912–1989 ई0

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद	अथर्ववेद

शरदुत्सव 2015 की हार्दिक शुभकामनायें

WHEEZAL

HOMOEOPATHY

A State of the Art, World Class GMP Certified Homoeopathic Unit.

RANGE OF PRODUCTS

- MOTHER TINCTURES & DILUTIONS
- BIO-CHEMICS & BIO COMBINATIONS
- TRITURATION TABLETS
- SPECIALITY TABLETS
- DR. FAROKH J. MASTER'S (WL DROPS)
- LIQUID ORALS
- SPECIALITY DROPS
- EYE, EAR & NASAL CARE
- SKIN, HAIR & DENTAL CARE
- OINTMENTS & CREAMS
- TWIN PACKS
- GLOW BRIGHT SOAPS

WHEEZAL

QUALITY PRODUCTS FROM THE HOUSE OF WHEEZAL

GMP & ISO CERTIFIED
SERVING MANKIND SINCE 1944

Web : www.wheezal.com
E-mail : info@wheezal.com

Customer Care : +91 135-2734277
Fax : +91 135-2734560

ओ३म्

पवमान

वर्ष—27 अंक—9

भाद्रपद—आश्विन 2072 विक्रमी सितम्बर 2015

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,115 दयानन्दाब्द : 190

★

—: संरक्षक :—

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

—: अध्यक्ष :—

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

—: सचिव :—

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

—: आद्य सम्पादक :—

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

—: मुख्य सम्पादक :—

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 08755696028

★

—: सम्पादक मण्डल :—

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

—: कार्यालय :—

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून—248008

दूरभाष : 0135—2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
मूर्ति पूजा सबसे बड़ा पाखण्ड है	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
'मृतक श्राद्ध विषयक भ्रान्तियां......	मनमोहन कुमार आर्य	8
अवैदिक प्रचलन	लोकनाथ शास्त्री	11
दयानन्द—दृष्टान्त—मणिका	डॉ० सुधीर कुमार आर्य	13
यज्ञ का फल	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	15
'स्वामी दयानन्द और हिन्दी'	मनमोहन कुमार आर्य	17
स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन के......	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य	19
गठिया और उसका उपचार		21
आपकी जानकारी के लिए..........		23
आर्ष परम्परा के संवाहक.....	डॉ० दिनेश चन्द्र शास्त्री	25
शरदोत्सव		26
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती	वैदिक साधन आश्रम तपोवन	27
दानदाताओं की सूची		28
पवमान पत्रिका के वार्षिक ग्राहकों की सूची		29

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/— प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000/— प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000/— प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

अज्ञान और अन्धविश्वास का निराकरण

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार जिससे पदार्थों के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान हो सके उसे विद्या कहते हैं। 'अविद्या' का यौगिक अर्थ है–विद्या से भिन्न ज्ञान जो यथार्थ ज्ञान नहीं है। मुण्डोकपनिषद् में विद्या के दो भेद किए गए हैं–परा विद्या और अपरा विद्या। परा विद्या वह है जिससे ब्रह्म को जाना जाता है। भौतिक जगत् के जिस ज्ञान को आजकल विज्ञान कहते हैं, उसी को उपनिशद् में अपरा विद्या के नाम से कहा गया है। **यजुर्वेद के एक मंत्र में, विद्या का अर्थ वेद से प्राप्त ज्ञान से शुद्ध कर्म और उपासना करना है। यहां पर अविद्या ऐसी है जो विद्या के साथ मिल कर साधक के लिए हितकारी बन जाती है और परमेश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान करा सकती है।** यदि कोई विद्याहीन है या केवल भौतिक ज्ञान तक ही सीमित है तो वह परमेश्वर के सत्य स्वरूप को नहीं जान सकता है। सभी धर्मों और सम्प्रदायों में परमेश्वर की उपासना पर बहुत बल दिया गया है। क्या मन्दिर में प्रसाद या रुपयों का चढ़ावा देकर परमेश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है? क्या उपासना व्यापार की वस्तु है? क्या परमेश्वर को प्रशंसा और कीर्तिगान चाहिए? परमेश्वर न तो प्रशंसा के भूखे हैं और न ही उन्हें किसी प्रसाद आदि से संतुष्ट किया जा सकता हैं। परमेश्वर को ऐसे समस्त प्रलोभन देने वाले व्यक्ति, वास्तव में परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते। इसके साथ ही हम देखते हैं कि पुराण आदि ग्रन्थों और तथा कथित पौराणिक धर्म गुरुओं ने यह भ्रांति फैला रखी है कि विभिन्न तीर्थों पर जाकर, विशेष कर कुम्भ आदि पर्वों पर स्नान करने से मुक्ति प्राप्त होती है। ऐसा अज्ञान फैलाते हुए, वे कर्मफल भोग के सिद्धान्त को भुला देते हैं। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल परमात्मा के अधीन है। उसे शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

इसी प्रकार मूर्ति पूजा भी एक बहुत बड़ा अज्ञान है। महर्षि ने मूर्ति पूजा का खण्डन करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के द्वादश सम्मुलास में लिखा है कि, ''जो पाषाणमूर्तियों को देखने से शुभ परिणाम मानते हो तो उसके जड़त्वादि गुण भी तुम्हारे में आ जायेंगे। जब जड़बुद्धि होंगे तो सर्वथा नष्ट हो जाओगे।'' मूर्ति पूजा के अतिरिक्त समाज में व्याप्त मरे हुए पितरों का श्राद्ध, तर्पण, तंत्र विद्या, फलित ज्योतिष, गुरुडम, जातिवाद, सतीप्रथा, बालविवाह, पशुबलि आदि कुप्रथाओं और अन्धविश्वासों का मूल कारण अज्ञान और पाखण्ड है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों और प्रवचनों के माध्यम से इन्हें दूर करते हुए परमेश्वर के सत्य स्वरूप को जानने की प्रेरणा दी है। हम समस्त आर्यों का कर्तव्य है कि उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय करके इन सत्य सिद्धान्तों को न केवल अपने जीवन में अपनाएं अपितु इनका प्रचार व प्रसार कर समाज में व्याप्त अज्ञान और अन्धविश्वास के झाड़–झंकाड़ की निराई (निराकरण) करें। इसी विषय पर, यह विशेषांक प्रस्तुत है।

पुनश्चः इस अंक के साथ वर्तमान सम्पादक मण्डल, पत्रिका के सम्पादन कार्य का एक वर्ष पूर्ण करके दूसरे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। पत्रिका को, सुधि पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने का प्रयास है। इसकी प्रगति हेतु आपके सुझावों का स्वागत रहेगा।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

गुहा में दर्शन

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
तस्मिन्निदं संचविचैतिसर्व स ओतश्य प्रोतश्य विभः प्रजासु।।

(ऋ0 10। 82। ; यजु 17।31)

शब्दार्थः– (**यत्र**) जिस ईश्वर में (**विश्वर**) समस्त संसार (**एकनीडम् भवति**) एक घोंसले के समान तुच्छरूप में है (**च**) और (**तस्मिन् इदम्, सर्व**) उसी में यह समस्त संसार (**सम् एति**) चला जाता है।, प्रलयकाल से प्रकट होता है। (**सः**) वह परमेश्वर (**विभूःप्रजासु**) उत्पन्न होने वाली सभी सृष्टियों और प्राणियों में (**औतः– प्रोतः**) औत– प्रौत है, ताने और बाने की भाँति व्याप्त है। (**वेनः**) योगाभ्यासी, साधनाशील व्यक्ति (**तत् सत्**) उस सत्यस्वरूप नित्यब्रह्म को (**गुहा निहितम्**) हृदय–गुहा में स्थित हुआ (**पश्चयात्**) देखता है।

भावार्थ–

1. हमारे लिए यह संसार बहुत महान है, अत्यन्त विस्तृत है। यदि मनुष्य बड़े से बड़े विमान में बैठकर अपने जन्मों तक भ्रमण करता रहे तो भी इसका वार–पार नहीं पा सकता। इतना अपार संसार उस अत्यन्त प्रभु में एक तुच्छ घोंसले की भाँति समाया हुआ है।
2. यह अखिल ब्रह्माण्ड उसी से उत्पन्न होता है और उसी में विलीन हो जाता है।
3. वह परमात्मा उत्पन्न होने वाली सभी सृष्टियों में तथा सभी प्राणियों में समाया हुआ है। वह इन सभी में इस प्रकार ओत–प्रोत है जैसे सूत ताने और बाने में ओत–प्रोत होता है।
4. ऐसे अत्यन्त परमात्मा को योगी, उपासक जन अपने हृदय मन्दिर में देखते हैं। ईश्वर के दर्शन यदि कहीं हो सकते हैं तो हृदय में। अतः मूर्तियों में टक्कर न मारकर उसे हृदय में ही खोजना चाहिए।

मूर्ति पूजा सबसे बड़ा पाखण्ड है

—कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

संसार में मूर्ति पूजा का इतिहास ज्ञात करने पर पता चलता है कि जैन—बौद्ध—काल से पूर्व इसका आरम्भ नहीं हुआ था। चीन के प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता और यात्री फाहियान ने सन् 400 ई0 में भारत की यात्रा की थी। उसने देखा था कि पटना में प्रतिवर्ष दूसरे मास के आठवें दिन मूर्तियों की एक सवारी निकाली जाती थी। उसका रूप आजकल की, जगन्नाथ यात्रा में निकाली जाने वाली मूर्तियों की रथ यात्रा के समान था। फाहियान की यात्रा के लगभग 240 वर्ष बाद सन् 640ई० में दूसरा चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया। उसके आगमन के समय तक हिन्दुओं में भी मूर्ति पूजा का प्रचलन हो चुका था। कुछ विद्वानों का मत है कि सबसे पहले मूर्ति पूजा जैनियों ने प्रारम्भ की और बौद्धों ने जैनियों से मूर्ति पूजा करना सीखा। हिन्दुओं ने जैनियों और बौद्धों से मूर्ति पूजा करना सीखा था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार पाषाणदि मूर्ति पूजा जैनियों से प्रचलित हुई। मूर्ति पूजा के प्रारम्भ के समय के सम्बन्ध में विद्वानों के मतों में थोड़ा—बहुत अन्तर हो सकता है परन्तु यह निर्विवादित तथ्य है कि वैदिक काल से लेकर महाभारत काल पर्यन्त इस देश में किसी प्रकार की मूर्ति पूजा नहीं की जाती थी। विचारणीय विषय यह है कि मूर्ति पूजा का आरम्भ क्यों हुआ?

महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में लिखते हैं— ''जब बडे—बड़े विद्वान्, राजा, महाराजा, ऋषि, महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गए और बहुत से मर गए तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ......केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढ़ते रहे सो पाठमात्र भी क्षत्रिय आदि को न पढ़ाया, क्योंकि जब अविद्वान् हुए गुरु बन गए तब छल, कपट, अधर्म भी उनमें बढ़ता चला। ब्राह्मणों ने विचारा कि अपनी जीविका का प्रबन्ध बाँधना चाहिए। सम्मति करके यही निश्चय कर क्षत्रिय आदि को उपदेश करने लगे कि हम ही तुम्हारे पूज्यदेव हैं। बिना हमारी सेवा किए तुमको स्वर्ग या मुक्ति नहीं मिलेगी। किन्तु जो तुम हमारी सेवा न करोगे तो घोर नरक में पड़ोगे। जो—जो पूर्ण विद्या वाले धार्मिकों का नाम ब्राह्मण और पूजनीय वेद और ऋषि—मुनियों के शास्त्र में लिखा था उनको अपने मूर्ख, विषयी, कपटी, लम्पट, अधर्मियों पर घटा बैठे। भला, वे आप्त विद्वानों के लक्षण इन मूर्खों में कब घट सकते हैं? परन्तु जब क्षत्रियादि संस्कृत विद्या से अत्यन्त रहित हुए तब उनके सामने जो—जो गप्प मारी सो—सो बिचारों ने मान ली। तब इन नाम मात्र के ब्राह्मणों की बन पड़ी। सबको अपने वचन—जाल में बाँधकर कहने लगे कि— **ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः ।** (पाण्डव गीता)

महर्षि स०प्र० एका० समु० में कहते हैं— ''जब पोपजी अपने चेलों को जैनियों से रोकने लगे तो भी मन्दिरों में जाने से न रुक सके और जैनियों की कथा में भी लोग जाने लगे। जैनियों के पोप इन पुराणियों के पोपों के चेलों को बहकाने लगे। तब पुराणियों ने विचारा कि इसका कोई उपाय करना चाहिए, नहीं तो अपने चेले जैनी हो जायेंगे। पश्चात् पोपों ने यही सम्मति की कि जैनियों की सदृश चौबीस अवतार, मन्दिर, मूर्ति और कथा के पुस्तक बनावें। इन लोगों ने जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों के सदृश चौबीस अवतार, मन्दिर, और मूर्तियाँ बनाईं। और जैनियों के आदि और उत्तर पुराणादि हैं, वैसे ही अठारह पुराण बनाने लगे।

वेदों में मूर्ति पूजा का अत्यन्त निषेध–

वेदों में मूर्ति पूजा का कोई विधान नहीं है। वेद में तो स्पष्ट घोषणा की गई है– **न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।** अर्थात् जिसका नाम महान् यशवाला है, उस परमात्मा की कोई प्रतिमा परिमाण सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।

महर्षि लिखते हैं कि वेदों में परमेश्वर के स्थान पर अन्य पदार्थ को पूजनीय मानने का सर्वथा निषेध किया गया है। महर्षि, स०प्र० एका० समु० में एक शंका '**मूर्ति पूजा में पुण्य नहीं तो, पाप तो नहीं है।**' का उत्तर देते हैं–'कर्म दो प्रकार के होते हैंः–एक विहित– जो कर्त्तव्यता से वेद में, सत्यभाषाणदि प्रतिपादित हैं। दूसरे निषिद्ध हैं। जैसे विहित का अनुष्ठान करना वह धर्म, उसका न करना अधर्म है, वैसे ही निषिद्ध कर्म करना अधर्म और न करना धर्म है। जब वेदों से निषिद्ध मूर्तिपूजादि कर्मों को तुम करते हो तो पापी क्यों नहीं?

पुराणों के अनुसार मूर्ति पूजा का स्वरूप–

जहां पुराणों में अनेक स्थानों पर मूर्ति पूजा का विधान मिलता है और एक दृष्टि से देखा जाए तो पुराणों की रचना ही अवतारवाद की स्थापना और मूर्ति पूजा को शास्त्रीय रूप देने के लिए की गई थी, वहीं इन ग्रन्थों में मूर्ति पूजा का अत्यन्त निषेध मिलता है। समस्त अठारह पुराणों का प्रणयन महर्षि वेद व्यास द्वारा किया जाना बताया गया है परन्तु सभी में न केवल सृष्टि के उत्पन्न होने के विषय में भिन्न–भिन्न कथाएं दी गई हैं अपितु प्रत्येक पुराण में दूसरे पुराण के आराध्य देवता की पूजा करने का घोर विरोध किया गया है। निम्न उदाहरण सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं–

पुराणों में मूर्ति पूजा का निषेध–

१– श्रीमद्भागवत, स्कं० १०, अ० ८४ में कहा गया है कि पत्थरों की मूर्तियां देवता नहीं होती। वे बहुत काल में भी पवित्र नहीं करती हैं।

२– श्रीमद्भागवत, स्कं0 ३, अ0 २९/२१–२२ में कहा गया है कि सर्वप्राणियों में जीवात्मा रूप में मैं व्याप्त रहता हूँ। जो मेरा निरादर करके मूर्ति का पूजन करते हैं, यह विडम्बना है। मैं सबकी देह में रहने वाला हूँ। जो मनुष्य मुझे त्याग कर प्रतिमा का पूजन करते हैं, वे अपनी अज्ञानता से राख में हवन करते हैं।

३– देवी भागवत, स्कं0 ६, अ0 ७/४२ में कहा गया है–

न ह्यम्बमयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः।
ते पुनन्त्यपि कालेन विष्णुभक्ता क्षणादहो।।

अर्थात् पानी के तीर्थ नहीं होते, मिट्टी और पत्थरों के देवता नहीं होते, वे किसी काल में भी पवित्र नहीं करते हैं।

पुराणों में आराध्य देवता से भिन्न अन्य देवताओं की पूजा का विरोध– कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं–

१– गणेश पूजा का निषेध–

योऽमूद् गजाना गणाधिपतिर्महेशात् तं भजन्ति मनुजा वितथप्रपन्नाः।

जानन्ति तेन सकलार्था फल प्रदात्रीः त्वां देवि विश्व जननी सेवनीयाम्।।

अर्थात् जो गणों के अधिपति शिवजी से पैदा हुआ है, उस गणेश जी की मूर्ख लोग पूजा करते हैं, वे सकल कला वाली एवं फलदात्री आपको नहीं जानते (इसलिए मूर्खतावश पूजा करते हैं)। पौराणिकों के समस्त मंगल कार्य गणेश पूजा से प्रारम्भ होते हैं, परन्तु देवी

भागवत (५–१६–२०) में गणेश पूजा का निषेध है।

२– विष्णु पूजा का निषेध–

शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं मीनो बभूव कमठः खलु शूकरस्तु।

पश्चात्नृसिंह इति यच्छल कृद्धरायां तान्सेवितान्जननि मृत्यु भय न किं स्यात्।।

अर्थात् जिस विष्णु ने भृगु के शाप से मछली, कछुआ, शूकर और नृसिंह के अवतार धारण किए और पीछे वामनादि बनकर संसार में छल किया, उस विष्णु के अवतारों की जो भक्ति करेंगे, उन्हें मृत्यु भय क्यों नहीं प्राप्त होगा? देवी भागवत (५–१८–१८)

३– ब्रह्मा और शिव की पूजा का निषेध–

अनचर्य्या ब्रह्मारुद्राद्या रजस्तमोविमिश्रिताः। त्वं शुद्धसत्त्वगुणवान् पूजनीयोग्रजन्मनाम्।।

अर्थात् ब्रह्मा और शिव रजोगुण और तमोगुण से युक्त हैं, अतः ये पूजने योग्य नहीं हें। हे विष्णु! आप सतोगुणयुक्त हो, अतः आप ही ब्राह्मणों द्वारा पूजे जाने योग्य हो। पद्म पुराण(उ0ख0अ0 २६३/६०)

पुराणों में आपस में अत्यन्त विरोध और साम्प्रदायिक प्रतिद्वंदिता है जिसके अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। उपरोक्त दृष्टान्तों से यह सिद्ध होता है कि चाहे आदिकाल में मूर्तिपूजा का कुछ भी कारण रहा हो परन्तु आगे चल कर इसका व्यवसायिकता में विस्तार हुआ और यही कारण है कि प्रत्येक पुराण में दूसरे पुराण के आराध्य देव की कटु आलोचना करते हुए अन्य देवों की पूजा न किए जाने सम्बन्धी बातों का कठोर रूप से उल्लेख किया गया है। धन कमाने की यही लोलुपता और पौराणिक काल की साम्प्रदायिक ईर्ष्या आगे चल कर भारत के पतन का कारण बनी। आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा अपनी पुस्तक, 'परापूजा' में मूर्ति पूजा की कड़ी आलोचना की गई है। इस पुस्तक मे मूर्ति पूजा सम्बन्धी विरोध इस प्रकार है–

१– पुराणों का वाक्य है– प्रतिमा–पूजा अधम है, स्तोत्रों का जपना मध्यम है, वेद–पूजा सर्वोत्तम है, महात्माओं की पूजा 'सोऽहम्' है।

२– तीर्थ, पशुयज्ञ, लकड़ी, पत्थर और मिट्टी की मूर्तियों में जिनके मन लगे हैं, वे मनुष्य अज्ञानी हैं।

३– पत्थरों से एक स्थान में बांध कर और देव को पाषाण बना कर, अरे पण्डित! कह तो सही, वह देवता कहाँ पर रहता है?

श्री शंकराचार्य ने अपने ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर ईश्वर के साकार होने का खण्डन किया और दावे के साथ कहा कि परमेश्वर सर्वाधार, और सर्वव्यापक है परन्तु इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि उनके उत्तराधिकारियों ने उनके किसी भी सदुपदेश को नहीं माना और देश की भोली जनता को मूर्ति पूजा और अन्धविश्वास के गहरे कुएं में धकेल दिया। उनके द्वारा स्थापित चारों मठों को चार तीर्थ घोषित कर मूर्ति पूजा का पहले से भी अधिक व्यापक प्रचार व प्रसार किया। श्री शंकराचार्य ने वैदिक धर्म की पुनः स्थापना का प्रयास किया था। इन पोपों की लीला से यह सपना साकार नहीं हो पाया। ऐसे में उन्नीसवीं सदी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म की पुनः स्थापना का ध्वज अपने पावन हाथों में दृढ़ता से पकड़ा। उन्होंने वेदों के आधार पर परमेश्वर के सत्य स्वरूप को हमारे समक्ष रखा जो निम्न प्रकार बताया गया है–

परमेश्वर का सच्चा स्वरूप–

यजुर्वेद (४०/८) में परमात्मा के विषय में कहा गया है–

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँशुद्धमपापविद्धम्।

अर्थात् परमात्मा सबमें व्यापक, शीघ्रकारी और अनन्त बलवान् जो शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध, परमेश्वर अपनी जीवरूप सनातन आदि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति अर्थात् जिस–जिस गुण सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुण, अकाय अर्थात् वह कभी शरीर धारण व जन्म नहीं लेता, जिसमें छिद्र नहीं होता, नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता है।

महर्षि ने वेद मंत्रों के आधार पर कहा कि परमेश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, सर्वव्यापक और नित्य आदि अनेकानेक गुणों से युक्त है। परमेश्वर आप्त–काम और पूर्णकाम है। परमात्मा में कोई कामना नहीं है जिसे उन्हें पूरा करना हो। अथर्ववेद में परमात्मा के विषय में कहा गया है–

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनेनः। अथर्व0 10.8.44

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि परमेश्वर अकाम हैं, सारी कामनाओं से रहित हैं, उन्हें अपने लिए किसी वस्तु को प्राप्त नहीं करना है, वे धीर हैं, संसार के किसी भी परिवर्तन से उनमें कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे सदा एक–रस रहते हैं, वे अपनी समावस्था को नहीं खोते हैं, वे मृत्यु से रहित हैं, स्वयंभू हैं– अपनी सत्ता का हेतु स्वयं ही हैं, उनकी सत्ता में और कोई कारण नहीं है, उन्हें किसी ने बनाया नहीं है, वे सदा से स्वयं ही चले आ रहे हैं, वे आनन्द से तृप्त हैं, परिपूर्ण हैं अर्थात् कहीं से भी किसी प्रकार की कमियों वाले नहीं हैं।

मूर्ति पूजा के प्रचलन से लोगों को यह बताया जाता है कि यदि मन्दिर में प्रसाद या रुपयों का चढ़ावा देंगे तो परमेश्वर प्रसन्न होकर उन्हें मनवांछित फल प्रदान करेंगे। यह बात उनके हृदय में बैठ जाती है और वे उपासना को व्यापार की वस्तु समझ बैठते हैं। वे समझते हैं कि परमेश्वर को प्रशंसा और कीर्तिगान चाहिए, जिसे प्रदान कर वे उससे अपना कोई भी प्रयोजन सिद्ध कर सकते हैं। परमेश्वर न तो प्रशंसा के भूखे हैं और न ही उन्हें किसी प्रसाद आदि से संतुष्ट किया जा सकता हैं। साथ ही वे परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था से भी परिचित नहीं रहते हैं। यह सिद्धान्त निम्न प्रकार है–

कर्मफल भोग का सिद्धान्त–

वैदिक धर्म के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के लिए ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था परमात्मा के सार्वभौम नियमों द्वारा संचालित होती है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल परमात्मा के अधीन है। उसे शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। इसलिए मूर्ति पूजा निरर्थक है। परमात्मा का साक्षात्कार पांचों ज्ञानेन्द्रियों से नहीं किया जा सकता है। यदि उसका साक्षात्कार करके मोक्ष मार्ग पर बढ़ना है तो इसके लिए उसकी उपासना करनी चाहिए। विद्या और तप से अपने आत्मा को शुद्ध करके परमात्मा के गुणों का चिन्तन करते हुए उसमें ध्यान लगा कर समाधि की अवस्था तक पहुंचना ही उपासना का वास्तविक प्रयोजन है। मूर्ति पूजा– मृतक श्राद्ध, तर्पण, तंत्र विद्या, फलित ज्योतिष, गुरुडम, जातिवाद, सतीप्रथा, बालविवाह, पशुबलि आदि कुप्रथाओं और अन्धविश्वासों का कारण अज्ञान और पाखण्ड है। यह इस देश के पतन का सबसे बड़ा कारण रहा है। इस अन्धविश्वास को दूर करने में ही राष्ट्र की प्रगति और हमारा आध्यात्मिक कल्याण निहित है।

सौजन्य से– **APEX ENGINEERS**
Gurgaon (Haryana), Mob. : 09810481720

'मृतक श्राद्ध विषयक भ्रान्तियां : विचार और समाधान'

–मनमोहन कुमार आर्य

हिन्दू समाज आजकल अन्धविश्वासों का पर्याय बन गया है। श्राद्ध शब्द को पढ़कर धर्म–कर्म में रूचि न रखने वाला एक अल्प ज्ञानी सामान्य व्यक्ति भी समझता है कि श्राद्ध शब्द एवं कार्य अवश्य ही श्रद्धा से सम्बन्ध रखता है। सत्य के प्रति निष्ठा को श्रद्धा कहते हैं। श्रद्धा उन पारिवारिक जनों व विद्वानों के प्रति होती है जिनसे हमें कुछ लाभ हुआ होता है। हमारे माता–पिता व वृद्ध पारिवारिक लोग व आचार्यगण हमारी श्रद्धा के मुख्य रूप से पात्र होते हैं। माता–पिता, दादी–दादा, प्रपितामही–प्रपितामह आदि के अतिरिक्त चाचा, ताऊ, बुआ, फूफा, मामा व मौसी आदि सभी संबंधियों के प्रति हमारा श्रद्धा व आदर का भाव होता है। अतः श्रद्धापूर्वक अपने से उन जीवित अधिक आयु वालों को अपने सद्व्यवहार व सेवा से सन्तुष्ट रखना ही श्राद्ध व तर्पण हो सकता है। यदि हम माता–पिता, अन्य वृद्धों व आचार्यों सभी को भोजन, वस्त्र व उनकी आवश्यकतानुसार धन आदि देते हैं और वह हमारी इस सेवा व दान से प्रसन्न होते हैं तो हमारा यह कृत्य श्राद्ध व तर्पण में आता है। श्राद्ध है श्रद्धापूर्वक सेवा और तर्पण अपने आचरण व सेवा से उन्हें सन्तुष्ट करना। माता–पिता को सेवा की आवश्यकता तभी तक होती है जब तक की वह जीवित होते हैं। मरने के बाद अन्त्येष्टि द्वारा उनका शरीर भस्म कर दिया जाता है। मृत्यु होने पर चेतन तत्व शरीर से पृथक हो जाता है अतः उसे भोजन की आवश्यकता नहीं होती। **अब तो परलोक व परजन्म में उनका सहायक ईश्वर तथा उनके कर्म अर्थात् प्रारब्ध ही होते हैं।** हम कुछ भी कर लें, हमारे कुछ भी करने से हमारे किसी मृतक सगे सम्बन्धी माता–पिता आदि को कोई, किसी प्रकार का व किंचित लाभ नहीं हो सकता है। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए नहीं दी कि वह किसी भी कार्य को बिना सोच विचार के इसलिए करे कि उसके पूर्वज व अन्य लोग इस

कार्य को करते चले आ रहे हैं अपितु इसलिए दी है कि वह प्रत्येक कार्य को सत्य व असत्य का विचार कर करे। यदि हम श्राद्ध को देखें तो इससे हमारे पुरोहितों को विशेष आर्थिक व भौतिक लाभ होता है। वह अच्छा भोजन करते हैं और उन्हें कुछ वस्तु भी दान स्वरूप प्राप्त होती

हैं। किसी कार्य आदि से जिस व्यक्ति को कोई लाभ होता है तो उसका वह संस्कार बन जाता है और एषणा जुड़ जाती है। उसे कितना ही कोई मना करे, वह उस कार्य को छोड़ता नहीं है। रिश्वत, कामचोरी, शराब, मांसाहार जैसी बुरी आदतों की ही तरह हर कार्य जिससे किसी को कोई लाभ होता हो, उसे वह छोड़ नहीं पाता है। अतः मनुष्य को स्वयं ही व्यक्तिगत तौर पर सत्य व असत्य का विचार करना चाहिये और असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करना चाहिये। संसार में आपसे अधिक आपका कोई हितैषी नहीं है। अन्य लोग तो एक दूसरे से अपना अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। अपना हित व अहित देखना और बुद्धि पूर्वक निर्णय करना हम सबका दायित्व है, यह बात गांठ बांध लेनी चाहिये। यही मनुष्य जीवन का मुख्य कर्तव्य व उद्देश्य भी है।

श्राद्ध में जो भोजन पण्डितों वा पुरोहितों को कराया जाता है उससे उनकी क्षुधा की निवृत्ति होती है या पेट भरता है। हमारे मृतक पूर्वजों का न तो हमें पता है और न ही हमारे श्राद्ध का भोजन खाने वाले व बड़े से बड़े किसी विद्वान को यह ज्ञात होता है कि वह आत्मायें जिनका श्राद्ध हो रहा है, वह कहां हैं? **मृत्यु के बाद मृतकों की आत्माओं की ओर से अपने किसी सगे सम्बन्धी को कभी भी अपना न तो कोई समाचार बताया जाता है और न ही हमारे हाल चाल ही पूछे जाते हैं।** मरने के बाद मनुष्य सब कुछ भूल जाता है। परमात्मा की प्रेरणा से वह अपने कर्मों के अनुसार नई योनि में जन्म लेता है। मनुष्य जन्म लेने वाला कोई बच्चा यह नहीं बताता कि मैं पहले मरा हूँ, कहां रहता था, अमुक नाम के लोग मेरे पुत्र–पुत्री थे, आदि–आदि। कारण कि वह सब कुछ भूल चुका होता है। जीवात्मा गर्भावास में लगभग 10 माह रहती है। अब विचार कीजिए कि इस नये उत्पन्न शिशु का इसके पूर्व जन्म के पारिवारिक जनों ने श्राद्ध किया तो इसको वह भोजन मिलना चाहिये था लेकिन इसका उसे व उसके वर्तमान परिवार जनों को कभी अनुभव नहीं होता। यह तो जन्म लेने के बाद प्रातः सायं प्रतिदिन माता से भोजन पाता व करता है। यदि श्राद्ध के दिन इसके पूर्व जन्म की कोई सन्तान इसका श्राद्ध करे तो एक समय के भोजन की इसकी निवृत्ति होकर अनुभव भी होना चाहिये। ऐसा तो कभी किसी को भोजन का मिलना होता नहीं है। यदि कोई यह मानता है कि श्राद्ध करने से पूर्वजों को भोजन पहुंचता है तो उन्हें प्रातःसायं दोनों समय पूरे वर्ष भर ही श्राद्ध करना चाहिये जैसे कि जीवित माता–पिता, दादी दादा व परदादी व परदादा को दिन में दो बार भोजन कराया जाता है। मनुष्य व पशु योनि के प्राणियों को भूख तो प्रतिदिन कई बार लगती है, अतः जीवित वंशजो द्वारा प्रतिदिन दो समय मृतक श्राद्ध करना. सम्भव ही नहीं है। इसके विपरीत मृतक श्राद्ध का विचार ही ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता के प्रति अनास्था उत्पन्न करने वाला कार्य है जिससे मृतक श्राद्ध कर्ता नास्तिक सिद्ध होते हैं। हर दृष्टि से मृतक श्राद्ध करना, तर्क, युक्ति व वेदादि शास्त्र विरुद्ध कृत्य है। आर्य समाज के विद्वानों ने इस विषय का पर्याप्त साहित्य सृजित किया है। इनमें से एक ग्रन्थ **''श्राद्ध निर्णय''** वेदों के शीर्ष विद्वान पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ जी का रचा हुआ है। उसमें श्राद्ध के सभी पहलुओं पर विस्तार से विचार कर निर्णय किया गया है कि मृतकों का श्राद्ध अन्धविश्वास के अलावा कुछ नहीं है। यह भी बता दें कि हमारे यह पण्डित जी व हम भी पहले पौराणिक परिवारों के रहे हैं जहां मृतक श्राद्ध होता था और हमारे सम्बन्धी जो अज्ञान में

फंसे हुए हैं, वह अब भी मृतक श्राद्ध करते हैं। अभी तक सनातनी कहे जाने वाले हमारे बन्धुओं ने कोई ऐसा प्रमाण व युक्ति नहीं दी है जिससे श्राद्ध को युक्ति व तर्क से सिद्ध किया जा सके। अतः बुद्धि से विचार कर हमें केवल अपने जीवित माता–पिता व परिवार के सभी वृद्ध जनों जिन्हें हमारा भोजन, वस्त्र, ओषधि वा चिकित्सा आदि के रूप में किसी भी प्रकार से सेवा की आवश्यकता है, हमें कर्तव्यपूर्वक प्रतिदिन प्रातः व सायं उनकी यथोचित सेवा करनी चाहिये। अपनों की तो सेवा सभी को करनी है, इसके साथ ही सभी ज्ञानी व वृद्ध लोगों का भी सेवा सत्कार यथा सामर्थ्य सभी को करना चाहिये। यही वेदानुकूल मनुष्य धर्म है। यदि हम बुद्धिपूर्वक कार्य करेंगे और अन्धविश्वासों का त्याग करेंगे तो हम वैदिक काल के अपने स्वर्णिम वैभव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। हम भविष्य में पराधीनता व देश–समाज–जाति के लोगों के अपमान से बच सकते हैं जैसा कि मध्यकाल, मुस्लिम व ब्रिटिश शासन आदि में हमारे पूर्वजों को झेलना पड़ा है। यदि ऐसा नहीं करेंगे और बीती बातों से सबक व शिक्षा नहीं लेंगे तो उन घटनाओं की पुनरावृत्ति हो सकती है। ठोकर लगने पर जो न सम्भले उसका जो हश्र होता है, वही हश्र हमारा पुनः हो सकता है।

एक अन्य दृष्टि से भी श्राद्ध पर विचार करते हैं। हम इस समय 63 वर्ष के हैं। सम्भव है कि मृत्यु के समय हमारा 30 से 35 वर्ष का कोई पुत्र रहा होगा जो अब लगभग 93 वर्ष का होगा। उसका पुत्र भी लगभग 63 का और पौत्र भी लगभग 33 वर्ष का हो सकता है। इस प्रकार से पूर्व जन्म के हमारे पोते और पड़पोतों का जीवित होना सम्भव है। हमें अपने विगत 63 वर्षों के जीवन में इन सभी वंशजों से कभी श्राद्ध नाम का भोजन मिला हो, ऐसा अनुभव नहीं हुआ और न ही उससे होने वाली तृप्ति अनुभव हुई। संसार में सम्प्रति 7 अरब लोग हैं, शायद इसका एक भी गवाह नहीं मिलेगा जो दावा करे कि कभी उसके पूर्व जन्म के वशंजों के श्राद्ध से उसकी क्षुधा व अन्य कोई समस्या हल हुई हो। **अतः यह मृतक श्राद्ध अन्धविश्वास ही सिद्ध होता है।** महाभारतकालीन व पूर्व के साहित्य मुख्यतः वेद आदि में मृतक श्राद्ध आदि का कहीं कोई वर्णन नहीं है। अतः मृतक श्राद्ध असिद्ध है और अन्धविश्वास से अधिक कुछ नहीं है। यह भी कहना है कि हमारे कुछ ग्रन्थों में मध्यकाल में कुछ स्वार्थी लोगों ने प्रक्षेप कर दिये थे। यदि कहीं कोई उल्लेख मृतक श्राद्ध के पक्ष में है तो उस पर युक्तिपूर्वक विचार होना चाहिये। हर विद्वान, पुस्तक व ग्रन्थ लेखक को अपनी मान्यता के सम्बन्ध में तर्क व प्रमाण देने चाहिये। यदि पुस्तक व ग्रन्थ में कोरा प्रवचन हो तो उसे बुद्धि, युक्ति व तर्क हीन होने पर स्वीकार नहीं करना चाहिये। हम आशा करते हैं कि पाठक हमारे विचारों से सहमत होंगे। हम निवेदन करते हैं कि ईश्वर, महर्षि दयानन्द, व आप्त विद्वानों (ऋषि–मुनियों) द्वारा प्रदत्त वैदिक साहित्य को पढ़कर अपने जीवित पितरों का श्रद्धापूर्वक सेवा सत्कार नित्य प्रति कर उनकी आत्माओं को सन्तुष्ट व प्रसन्न करें और ऐसा करके लौकिक और पारलौकिक उन्नति करें, यही वेद, शास्त्र और ऋषि दयानन्द सम्मत है।

सौजन्य से–

KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT

DEHRADUN

अवैदिक प्रचलन

लोकनाथ शास्त्री

जब हम अपने प्यारे देश के गौरवमय इतिहास का अवलोकन करते हैं। जो हमें बड़ी प्रसन्नता होती है कि हमारे देश में सूर, तुलसी, कबीर, रहीम, रसखान, भूषण व मैथिलीशरण गुप्त जैसे महान, कवि हुए जिनकी रचनाओं से देशवासियों को सिर्फ ईश्वर भक्ति व देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहन ही नहीं मिला, साथ ही शिक्षा व प्रेरणा की प्राप्त हुई। ऐसे कवियों पर हमें नाज है, परन्तु भक्तिकाल के अन्तराल में वेद विरूद्ध कुछ मुहावरे, लोकोक्तियाँ, दोहे व चौपाइयां ऐसी प्रचलित हुई जिनसे भारतवासी सिर्फ अन्धविश्वास व पाखण्ड की ओर धकेले ही नहीं गये अपितु देश की उन्नति व समृद्धि में भी बाधक सिद्ध हुई है। जैसे–

अजगर करे न चाकरी, पंछी करें न काम।
दास मलूका कह गये, सब के दाता राम।।

इस दोहे से देशवासियों में आलस्य व प्रमांद की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला और निकम्मे लोग भेष बनाकर भीख मांगने को ही अधिक श्रेष्ठकर समझने लगे जिससे देश में अकर्मण्यता का रोग बढ़ा और देश कमजोर होकर अवनति को प्राप्त हुआ। सच्चे ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग जो संध्या, हवन, शुद्ध आचरण, सत्संग व योगाभ्यास है वह सब कुछ छूट गया और देश में अज्ञान अन्धविश्वास व पाखण्ड बढ़ा, जिसे देश वेद मार्ग से भटक गया। यहां यह बतलाना भी जरूरी है कि देव मानने से नहीं होता, देव अपने गुणों से माना जाता है। माता–पिता आचार्य व विद्वानजनों को हम चेतन देव मानते हैं। ये अपने त्याग, तपस्या, उदारता, सहृदयता, परोपकार व ज्ञान से देव हैं क्योंकि वे अपने ज्ञान व अनुभव से हमारा मार्गदर्शन करते हैं तथा ज्ञान व अनुभव से हमारा हित चाहते हैं। इसी प्रकार सूर्य चन्द्रमा पृथ्वी आदि भी जड़ देव हैं जो हमे प्रकाश, उष्णता, शीतलता व अन्न देते हैं, इसलिए यह देव है, न कि मानने से। एक मुहावरा जो काफी प्रचलित है, जिसको अच्छे–अच्छे वैदिक विद्वान भी अनायास ही कह देते हैं कि ईश्वर के घर में देर हैं, अन्धेर नहीं। यह भी वैदिक सिद्धान्तों के विरूद्ध हैं क्योंकि ईश्वर के घर में न देर है और न ही अन्धेर। उसका हर काम उपयुक्त समय पर न्याय युक्त ढंग से होता है। चाहे हमें दिखने में कैसा भी लगे। ईश्वर सर्वज्ञ हैं, उसके कार्यों में कभी भूल नहीं होती। देर अंधेर होने का तो प्रश्न ही क्या? कुछ विद्वान योग की आठ सिद्धियां बतलाते समय कह जाते हैं कि समाधि अवस्था में ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं। यह भी वेद विरूद्ध है कारण दर्शन हो जाने का तात्पर्य हुआ कि ईश्वर का कोई रूप है। यदि हम ईश्वर का रूप मान लें तो ईश्वर निराकार नहीं रहता है। वेदों में तो ईश्वर को निराकार बताया गया है। इसलिये समाधिस्थ योगी को ईश्वर के दर्शन न होकर उसको अनन्त आनन्द की अनुभूति होती है। यहां यह बतला देना भी उचित समझता हूं कि ईश्वर के पास आनन्द और ज्ञान ही निजी विशेष गुण हैं जो सुपात्र को देने के लिए सदैव उद्यत रहता है। आनन्द हमें परोपकारी कार्यों में, प्रगाढ निद्रा में और समाधि अवस्था में प्राप्त होता है और ज्ञान हमें ईश्वर कृत वेदों के स्वाध्याय से व प्रकृति की रचना को देखकर होता है। यम नियम सहित समाधि तथा सच्चे ज्ञान की प्राप्ति ही भक्ति के मार्ग को प्रशस्त करती है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। अब मैं आपका ध्यान उस विषय की तरफ ले जाना चाहता हूं जिस पर विस्तृत रूप से चर्चा करनी है। एक दोहा जो बहुत प्रचलित है।

गुरू गोविन्द दोउ खडे, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरू आप ने, गोविन्द दियो बताए।।

पिछले कुछ वर्षों से इस दोहे का बड़ा दुरुपयोग किया गया। इस दोहे से धूर्त पाखण्डी लोगों ने छद्म साधुवेश में अपनी रोजी रोटी के लिए भोले भाले भाई–बहनों को खूब लूटा खसोटा

जिसका वर्णन कर पाना भी असंभव है। वे छद्म साधु का वेश बनाकर सबसे कहते हैं कि बिना गुरू के गति नहीं इसलिए मुक्ति पाने के लिए गुरू बनाना आवश्यक है। वैसे तो मुक्ति पाने की अभिलाषा सभी को होती है लेकिन इन धूर्त पाखण्डियों के चंगुल में स्त्रियां ही ज्यादा फंसती हैं और उन धोखेबाजों को गुरू बनाकर कहती हैं कि हमें गुरू मंत्र दे दो। वे उनके कानों में भी रटे हुए स्वर वाक्य जैसे हरे कृष्ण, हरे राम, जय श्री कृष्ण, जय श्री सीता राम, जय हनुमान आदि कहकर कहते हैं कि इनका सुबह शाम या दो माला का जाप किया करें ताकि तुम्हारी मुक्ति हो सके। साथ ही यह भी कहते हैं कि मंत्र किसी को बताना नहीं। यदि किसी को बता दोगी तो मंत्र का प्रभाव खत्म हो जायेगा और किसी भी देवता का नाम लेकर कहेंगे कि इस देवता का कोप तुमको सहना पडेगा। इस भय में वह किसी को बताए बिना कूप मंडूक बनकर उसी मंत्र और गुरू कि फेरे में पड़ा रहता है। फिर वह गुरू अपने शिष्य को कहता है आप हमें साल में एक या दो बार बुलाकर गुरू दक्षिणा व वस्त्रादि दिया करो जिससे मेरी आत्मा खुश होकर आपको आशीर्वाद देगी और आप फूलों और फलोगे तथा आपका जीवन सुखी बनेगा और आप मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

इन धूर्तों से गुरू मंत्र लेकर वे लोग ठगाए तो जाते हैं साथ ही मुक्ति पाने के सही रास्ते से भटक कर बूरे कर्मों को करते हुए अपने जीवन को बर्बाद करते रहते हैं और यह सोच बैठते हैं कि हमने गुरूमंत्र तो ले ही रखा है इसलिए हमारी मुक्ति होनी तो निश्चित है, हमें दान पुण्य की क्या जरूरत है।

मेरा ऐसे लोगों से विन्रम निवेदन है कि वे इन ढोंगी, धूर्त, पाखण्डी, अज्ञानी, गुरूओं के चक्कर में न फंसकर विद्वान परोपकारी, त्यागी, तपस्वी, संयमी व सच्चे गुरू को अपनाऐं जो अच्छी शिक्षाओं से हमारे जीवन को उन्नत करें और मुक्ति पाने का सही मार्ग प्रस्तुत करें। जैसे राम, लक्ष्मण के गुरू विश्वामित्र, कौरव पाण्डवों के गुरू द्रौणाचार्य, चन्द्रगुप्त के गुरू चाणक्य, सिकंदर के गुरू अरस्तू, छत्रपति शिवाजी के गुरू रामदास और महर्षि दयानन्द के गुरू विरजानन्द जी थे।

मैं यहां यह बतलाना भी आवश्यक समझता हूं कि हमारी वैदिक संस्कृति में सच्चे गुरू को आचार्य कहा जाता है। आचार्य अपने आचरण से शिक्षा देता है अर्थात आचार्य अपने विद्यार्थियों को जो भी शिक्षा व उपदेश देवें वह अपने जीवन में भी अपनावें जिससे विद्यार्थियों पर उत्तम प्रभाव पड़े। दुःख का विषय है कि आज गुरू के पद का इतना अधिक दुरुपयोग होने लगा है कि वे सिर्फ गुरू बन जाने से ही संतुष्ट नहीं होते बल्कि वे अपने आपको ईश्वर का अवतार बताने लगे हैं। ऐसे अवतारों की बाढ़ आ गयी है। इसके लिए हमारी पुरानी मान्यताएं ही दोषी हैं कारण यदि हम श्री राम व श्री कृष्ण आदि को भगवान का अवतार न मानकर महान पुरूष मानते तो यह समस्या हमारे सामने नहीं आती और देश का बड़ा उपकार होता। महान पुरूषों को ईश्वर का अवतार मानने से सबसे बड़ा नुकसान तो यह है कि साधारण मनुष्य उनके जीवन से शिक्षा व प्रेरणा नहीं लेता बल्कि कह देता कि वह तो ईश्वर थे हम उनके पदचिह्नों पर कैसे चल सकते हैं और वे अपनी बुराइयों को छोड़ना तो दूर रहा बल्कि उनमें कोई बुराई बतलाकर उसे उचित ठहराने की कोशिश करते हैं। इस प्रवृति व गुरूडम ने देश को बहुत पतित अवस्था में लाकर खड़ा कर दिया है। यह देश व धर्म के हित चिंतकों के लिए चिंतन का विषय है।

सच्चा गुरू वह है जो शिष्य को अज्ञान व अंधकार से दूर हटाकर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करे।

With Best Compliments From :

KAMAL PLASTOMET

930/1, Behrampur Road, Village Khandsa, Gurgaon-122 001 (Haryana), Tel. : 0124-4034471, E-mail : krigurgaon@rediffmail.com

दयानन्द-दृष्टान्त-मणिका

डॉ० सुधीर कुमार आर्य

श्रेष्ठ गुरू–दक्षिणा

ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा– (योगदर्शन) चित्त की वृत्तियों का निरोध करके उपासना द्वारा समाधि में ईश्वर का साक्षात्कार करने वाले योगी की बुद्धि प्रज्ञा हो जाती है। जो केवल सत्य तत्व को ही धारण करती है।

दयानन्द सरस्वती विलक्षण बुद्धि वाले विलक्षण शिष्य थे। गुरू विरजानन्द की हृदयागत भावना को उन्होंने गुरूचरणों में अध्ययन करते ही जान लिया था कि गुरूवर देश में फैले हुए धर्म के आडम्बर तथा अज्ञान से बेहद क्षुब्द हैं इसी को दूर करने हेतु गुरूविरजानन्द ने गुरू दक्षिणा में भेंट, जो दयानन्द ने बड़े प्रयत्न से इकट्ठा करके श्रीचरणों में भेंट की थी, को अस्वीकार करके, प्रिय शिष्य दयानन्द का जीवन ही मांग लिया।

एक बार की बात है गुरू दक्षिणा में जीवन सौंपकर दयानन्द सद्धर्म का प्रचार करते हुए गुरू की नगरी मथुरा में पहुंचे । संयोगवश दयानन्द का अपने सहवाठी श्री युगलकिशोर के साथ मिलाप हुआ। अभिवादनादि शिष्टाचार के पश्चात दोनों शास्त्रार्थ करने में प्रवृत्त हो गये।

शास्त्रार्थ के दौरान दयानन्द ने कण्ठी तथा तिलक का प्रबल खण्डन किया। प्रतिवादी श्री युगल किशोर युक्ति और प्रमाण में जब शून्य हो गए तब उन्होंने गुरू विरजानन्द जी के चरणकमलों में चुगली करने की धमकी दयानन्द को दी। दयानन्द सहर्ष चुगली करने की अनुमति देकर हंसे। युगल किशोर ने गुरू विरजानन्द के श्रीचरणों में पहुंचकर कहा– भगवन्! दयानन्द को शिक्षा देकर आपने सांप को दूध पिलाने जैसा काम कर दिया।

दयानन्द तो धर्म के चिह्न माला, तिलक आदि की निन्दा करते हुए प्रचार कर रहा है। शिष्य युगल किशोर के मुख से इस घटना को सुनकर प्रमुदित गुरू जी ने पूछा– बेटा क्या तुम यह सत्य कहते हो? तुमको यह किसने बताया? प्रत्युत्तर में युगल किशोर ने कहा और कौन कहेगा? मेरे साथ वार्तालाप के प्रसंग में ही उस दयानन्द ने धर्म के इन चिह्नों की निन्दा की है। परन्तु परम प्रसन्न गुरू विरजानन्द ने इस समाचार को देने वाले युगल किशोर का अनेक बार साधुवाद किया।

सूचित करने वाले युगल किशोर ने सोचा कि गुरू विरजानन्द धर्म के चिह्न कण्ठी और तिलक की आलोचना सुनकर कुपित होंगे। दयानन्द का कटुवचनों से स्वागत करेंगे। परन्तु आशा के विपरीत शिष्य, गुरु जी के हर्ष को देखकर चकित युगल किशोर ने और अधिक खिन्न होकर अपनी माला को तोड़ने तथा तिलक को पोंछनें के लिए पूछा। गुरू जी की स्वीकृति मिलने पर उसी समय माला को तोड़ दिया तथा तिलक पोंछ दिया।

अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए युगल किशोर ने गुरू विरजानन्द से जब यह पूछा कि आपने हमको ऐसा उपदेश पहले क्यों नहीं दिया? तब गुरू जी ने उत्तर दिया कि तुम में से किसी एक को भी मैंने इस गुरूतर भार को वहन करने में समर्थ नहीं समझा।

शिक्षा–गुणेषु क्रियातां यत्नः, किमाटोपैः प्रयोजनम्।
विक्रीयन्ते न घण्टाभिर्गावः क्षीरविवर्जिताः।।

1. गुणों का ग्राही होना चाहिए व्यर्थ के आडम्बरों से कोई लाभ नहीं होता। जैसे कि गाय की कीमत उसके दूध से होती है, गले में बंधी हुई घण्टियों से नहीं।
2. इसी प्रकार धर्म का सार, स्वात्मा का कल्याण, शिष्यों के कल्याणार्थ पथ–प्रदर्शन, परोपकार, सत्यज्ञान का प्रचार–प्रसार है। कण्ठी(माला), तिलक, छाया, त्रिपुण्ड आदि बाह्य चिह्नों को धारण करना नहीं।

ब्राह्मण–कौन

न्यायात् पथः प्रविचलित पदं न धीराः।

धीर, विवेकी, ज्ञानी, मनस्वी जन, न्याय नीति, वेदोक्त मार्ग से अपने आपको विचलित नहीं करते तथा इस बात की चिन्ता भी नहीं करते कि नीति निपुण लोग निन्दा करेंगे अथवा प्रशंसा करेंगे। संसार की धन सम्पत्ति रहेगी या नष्ट हो जायेगी। इससे भी बढ़कर इस बात से भी निश्चिन्त होते हैं कि मृत्यु चाहे अब ही हो जाय या सौ वर्ष बाद हो। बल्कि निरन्तर नीति पथ पर बढ़ते ही जाते हैं।

पुष्कर में मेले के अवसर पर एक बार की बात है कि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने नानूराम नामक एक प्रतिष्ठित पंडित से गले में धारण की हुई माला को लक्ष्य करके पूछा– पण्डित जी! गले में पहनी हुई अवैदिक चिह्न इस माला से क्या लाभ है। आप इस अवैदिक चिह्न माला को निकाल दीजिए।

स्वामिवर्य की बात सुनकर पण्डित जी ने उत्तर दिया कि यदि तुम में से कोई भी ब्राह्मण इतर जन संन्यास दीक्षा लेवे तव मैं इसी समय इस माला को उतार कर फेंक देता हूं।

पण्डित का उत्तर सुनकर दुःखी होकर स्वामी दयानन्द ने कहा मैं क्या कर सकता हूं, सर्वत्र ही अविद्या अन्धकार व्याप्त है, मेरी स्मृति के अनुसार शास्त्रों में ज्ञानी ब्राह्मण से भिन्न अज्ञानी मनुष्य को संन्यास का अधिकार नहीं है।

शिक्षा– 1. माला धारण एवं तिलक आदि वैदिक नियमानुसार न होने से त्याज्य है।
2. संन्यास का अधिकार ब्राह्मण (वेद ज्ञान से युक्त) के अतिरिक्त किसी को नहीं।

धैर्यवान् संत

पुष्कर मेले के अवसर पर ही एक बार की बात है कि पौराणिक पंडित समूह ने स्वामी दयानन्द के साथ झगड़ा करने की इच्छा से शास्त्रार्थ करने के लिए स्वामी दयानन्द को ललकारा। वैदिक धर्म के प्रचार के इच्छुक स्वामी दयानन्द शास्त्रार्थ के लिए सदा तैयार रहते थे। जितना जल्दी हो मेरे देश में वेद विरूद्ध अज्ञान का नाश हो तथा वेदज्ञानरूप सूर्य का चहुँदिशि सर्वत्र प्रकाश हो ऐसी हार्दिक इच्छा स्वामी दयानन्द की थी इसलिए पंडित मण्डली के निमन्त्रण को स्वीकार करके तुरन्त ही वहां पहुंच गये। स्वामी दयानन्द के प्रकाण्ड पाण्डित्य के सामने वे पंण्डित जल्दी ही निरूतर हो गये तथा आगे कुछ भी बोलने में असमर्थ हो गये।

इसी बीच में उनकी व्यवस्था के अनुसार कुछ धूर्त लाठी लेकर वहां आ गये तथा स्वामी दयानन्द को गन्दी–गन्दी गालियां देने लगे। इन धूर्तों का विचार वहां झगड़ा करने का था लेकिन जाको राखे साईयां, मार सके ना कोय इस कहावत के अनुसार श्रीमान पुरी ने वहां आकर उन सभी धूर्तों को धमकाया और वहां से भगाया।

सभा में शान्ति होने के बाद सैकड़ों लोगों ने अपने गले से कण्डी उतारकर पुष्कर सरोवर में फेंक दिया।

शिक्षा– धर्म के रास्ते पर, सुधार का कार्य करते हुए, अनेक प्रकार की कठिनाई तथा अपमान आदि का सामना मनस्वी जन को करना पड़ता है परन्तु नीतिकार का कथन है कि मनस्वी जन न्याय के मार्ग से किसी भी प्रकार के भय से विचलित नहीं होते हैं।

आश्रम की सहायता के लिए आश्रम के सदस्य बनें

साधारण सदस्य रु 1200/– प्रति वर्ष
सहायक सदस्य रु. 6000/– प्रति वर्ष
विशिष्ट सदस्य रु. 12000/– प्रति वर्ष
सम्मानित सदस्य रु. 25000/– प्रति वर्ष
विशिष्ट सम्मानित सदस्य रु. 50000/– प्रति वर्ष

यज्ञ का फल

महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

यज्ञ करने वाले जातक को तीन प्रकार का फल मिलता है– आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक। कर्मकाण्डी याजक पर जब इन्द्र की प्रसन्नता होती है तो याजक को आधिभौतिक ऐश्वर्य गौओं के रूप में प्रदान करता है। वे गौएं होती हैं, बहुत दुग्ध देने वाली, दर्शनीय आकृति की गौएं कपिला, लाल और काली। उन गौओं की सेवा भृत्य नहीं करते, अपितु स्वामी याजक स्वयं उनकी ऐसी सुधि लेता है, जैसे स्वगृह के अपने परिवार, अपने सन्तान की लेते हैं। उत्तम से उत्तम घास चारा, स्वच्छ शुद्ध जल, सुन्दर रमणीक स्थान में निवास कराता है। ऐसी गौएं याजक साधक को ब्रह्मतेज प्राप्त कराती है।

अध्यात्मिक रूप में इन्द्र की प्रसन्नता का फल सब इन्द्रियों का दमन, मन का शमन, इन्द्र का साक्षात् करना होता है।

आधिदैविक रूप में इन्द्र की प्रसन्नता का फल शासन–शक्ति, नेतृत्व का हाथ, और वाणी में बल प्राप्त होता है।

यजुर्वेद अध्याय 1 मंत्र 2. में इस फल को विस्तार से वर्णन किया है –

ओं वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो धर्मोऽसि विश्वधाऽसि। परमेण धाम्ना दृꣳहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्।।

अर्थात्– हे विद्यायुक्त मनुष्य! ये जो (**वसोः**) यज्ञ **(पवित्रं)** शुद्धि का हेतु है **(द्यौः असि)** जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु है और सूर्य की किरणों में स्थिर होनेवाला (**असि)** है जो **(पृथिवी)** वायु के साथ देश–देशान्तर में फैलानेवाला (असि) है जो (**मातरिश्वा**) वायु को **(धर्मः)** शुद्ध करनेवाला **(असि)** है तथा जो (**परमेण**) उत्तम (**धाम्ना**) स्थान से **(दृꣳहस्व)** सुख का बढ़ाने वाला है, इस यज्ञ का (**मा**) मत (**ह्वाः**) त्यागकर, तथा **(ते)** तेरा **(यज्ञपतिः)** यज्ञ की रक्षा करनेवाला यजमान भी इसको **(मा)** न **(ह्वार्षीत्)** त्यागे।

भावार्थ यह है कि मनुष्य लोग अपनी विद्या तथा उत्तम क्रिया से जिस यज्ञ का सेवन करते हैं उससे 1. पवित्रता का प्रकाश 2. पृथ्वी का राज्य 3. वायुरूपी प्राण के तुल्य राज–नीति 4. प्रताप 5. सबकी रक्षा, 6. इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि 7. परस्पर कोमलता से वर्तना 8. कुटिलता का त्याग इत्यादि श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं इसलिए सब मनुष्यों को परोपकार तथा अपने सुख के लिए विद्या और पुरुषार्थ के साथ प्रीतिपूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।

सेठ– सनातनधर्मी लोग जब मंत्र पढ़ते हैं तो सिवाय आरम्भ वाले मंत्र के अन्य मंत्रों के साथ ओम् नहीं लगाते, और कई अन्त में भी ओम् लगाकर स्वाहा करते हैं, यह भेद क्यों है?

प्रभु आश्रित– यज्ञ–हवन अग्नि में किया जाता है। अग्नि में भी गौण रूप से परमात्मा के गुण 'भूर्भुवः स्वः' जगत् के जीवन के हेतु प्राण भूः, मलनाशक भुवः, सुखवर्धक तेजप्रसारक स्वः विद्यमान है। इसलिए अग्निहोत्र में मनुष्य मंत्र के साथ ओम् पहले कहता है इसका अर्थ है कि वह यह कार्य परमात्मा की साक्षी में कर रहा है। जिसकी पुष्टि वह स्वाहा से करता है कि जो कहा सो ठीक कहा और वैसे ही ठीक किया। इसलिए आरम्भ में ओम् बोलना ही चाहिए। मनु भगवान ने लिखा है कि जो मन्त्र के आदि में ओम् नहीं लगाता उसका (मन्त्र का) सिर कट जाता है और जो अन्त में ओम् नहीं लगाता वह अपूर्ण रह जाता है।

परन्तु यह याद रखो कि पांच प्रकार के यज्ञ में शास्त्रकारों ने उनके लिए स्वाहा के अर्थों के अपने–अपने शब्द नियत किये हैं–

ब्रह्मयज्ञ में ओम् अन्त में लगाना चाहिए और देवयज्ञ में स्वाहा अन्त में, पितृयज्ञ में स्वधा, बलिवैश्वदेवयज्ञ में नमः और अतिथियज्ञ में वषट् लगाना चाहिए। इन पांचों का एक ही अर्थ है, इसलिए ह्वन–यज्ञ में स्वाहा की कहना पर्याप्त है।

सेठ– मंत्रों में देवता का सम्बन्ध, उनके आह्वान का क्या अभिप्राय है और आह्वान कैसे किया जाता है? क्या मंत्र पढने से आह्वान हो जाता है या देवताओं का पृथ्वी पर स्थापना व पूजन करने से आह्वान होता है और उनसे सम्बन्ध बन जाता है?

प्रभु आश्रित– जिस कार्य को आरम्भ करना हो उसकी निश्चित सफलता तब होती है जब कार्य के देवता और जिस इन्द्रिय से कार्य करना हो उसके देवता का पारस्परिक मेल करा दिया जाए, देवता को देवता शीघ्र आकर्षित कर लेते हैं, उनका ऐसा ही सम्बन्ध प्रभुदेव ने बनाया है। वायुयान सदा वहीं उतरता है जहां वायुयान का अड्डा बना हो। बिना हवाई अड्डे के कहीं नहीं उतरेगा। जिस देवता को अपने अन्दर बुलाना हो उसके गुण, कर्म, स्वभाव को अपने अन्दर धारण कर लिया जाय तो देवता स्वयं वहां आ विराजेगा, जैसे वायुयान वाय्वी अड्डे पर उतरता है। मानो कि हम देवयज्ञ करने लगे हैं, यज्ञ की पूर्ण सफलता तब होगी जब यज्ञ का देवता इन्द्र प्रसन्न होगा।

हम हाथों से यज्ञ करते हैं, हाथ का देवता इन्द्र है। इन्द्र ही सब ऐश्वर्य का दाता है और हाथ भी। इन्द्र बनकर भेंट इन्द्र के गुण, कर्म स्वभाव से करें।

दृष्टान्त समुच्चय

पं0 शिवशर्मा उपदेशक

वर्षा ने बचाए प्राण

एक सिपाही 20 वर्ष नौकरी करके घर आ रहा था। उसने अपनी स्त्री के लिए एक कच्चे रंग की चुनरी और अपने लडकों के लिए कच्चे रंग के खिलौने और कुछ बताशे ले लिए परन्तु मार्ग में वर्षा होने लगी। इससे सिपाही की चुनरी और खिलौने का रंग छूट–छूट कर बहने लगा और बताशे पानी में घुल गये। यह देख सिपाही ने कहा,'' हाय बीस वर्ष के पश्चात् एक कच्ची चुनरी, खिलौने कुछ बताशे बच्चों के लिए ले जा रहा था वह भी परमेश्वर से नहीं देखा गया।''

थोड़ी ही दूर चल कर वह क्या देखता है कि एक नाले में दो डाकू बैठे हैं। वे उस पर बंदूक से गोली चलाना चाहते हैं। पर बंदूक टोपीदार है। उस बारिश के कारण बंदूक रंजक खा गई अतः गोली नहीं चली। यह देख वह कहता है, ''धन्य हो परमात्मा, यदि इस समय वर्षा न होती तो मेरे प्राण चले जाते और अपने बाल बच्चों का मुख भी न देख सकता। यह चुनरी और खिलौना यहीं पड़े रहते। अब यह वर्षा रूके तो घर पहुँचूँ और अपने बाल बच्चों से मिलूँ इसलिए मैने जो अज्ञानता में आपको कुछ कहा हो उस अपराध के लिए मुझे क्षमा कीजिए।''

स एव धन्यो विपदि स्वरूपं यो न मुञ्चति।
त्यजत्यर्ककरैतप्तं हिमदेहं न शान्तिमाम्।।

फल– परमात्मा सदैव प्राणियों की सहायता करता है।

आप भौतिक साधनों का जितना अधिक प्रयोग सुख के लिए करेंगे, आपकी सहनशक्ति, उतनी ही अधिक घटती जाएगी।

ओ३म्

‘स्वामी दयानन्द और हिन्दी’

–मनमोहन कुमार आर्य

भारतवर्ष के इतिहास में महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पराधीन भारत में सबसे पहले राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए हिन्दी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण जानकर मन, वचन व कर्म से इसका प्रचार–प्रसार किया। उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि हिन्दी शीघ्र लोकप्रिय हो गई। यह ज्ञातव्य है कि हिन्दी को स्वामी दयानन्द जी ने आर्यभाषा का नाम दिया था। स्वतन्त्र भारत में 14 सितम्बर 1949 को सर्वसम्मति से हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया जाना भी स्वामी दयानन्द के इससे 77 वर्ष पूर्व आरम्भ किए गये कार्यों का ही सुपरिणाम था। स्वामी दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी। उनका अध्ययन–अध्यापन संस्कृत में हुआ था, इसी कारण वह संस्कृत में ही वार्तालाप, व्याख्यान, लेखन, शास्त्रार्थ तथा शंका–समाधान आदि किया करते थे। 16 दिसम्बर, 1872 को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी वैदिक मान्यताओं के प्रचारार्थ भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता की एक सभा में संस्कृत में भाषण कर रहे थे और उसका बंगला में अनुवाद गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज, कलकत्ता के उपाचार्य पं. महेश चन्द्र न्यायरत्न कर रहे थे। अनेक स्थानों पर स्वामी जी के व्याख्यान को अनुदित न कर उसमें अपनी विपरीत मान्यताओं को श्री न्यायरत्न ने प्रकट किया जिससे संस्कृत कालेज के श्रोताओं ने उनका विरोघ किया। विरोध के कारण श्री न्यायरत्न बीच में ही सभा छोड़कर चले गये थे। बाद में **स्वामी दयानन्द जी को श्री केशवचन्द्र सेन ने सुझाव दिया कि वह संस्कृत के स्थान पर हिन्दी को अपनायें।** स्वामी दयानन्द जी ने तत्काल यह सुझाव स्वीकार कर लिया। **यह दिन हिन्दी के इतिहास की एक प्रमुख घटना थी कि जब एक 47 वर्षीय गुजराती मातृभाषा के संस्कृत के विश्वविख्यात वैदिक विद्वान स्वामी दयानन्द ने तत्काल हिन्दी को अपना लिया। ऐसा दूसरा उदाहरण इतिहास में अनुपलब्ध है। इसके पश्चात स्वामी दयानन्द जी ने जो प्रवचन दिए उनमें वह हिन्दी का प्रयोग करने लगे।**

उपरोक्त घटना के लगभग 2 वर्ष पश्चात ही स्वामी जी ने 2 जून 1874 को उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के प्रथम संस्करण का प्रणयन आरम्भ किया और लगभग 3 महीनों में पूरा कर डाला। सत्यार्थ प्रकाश के पश्चात स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थ लिखे जो सभी हिन्दी में हैं। स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य ग्रन्थों को इस बात का गौरव प्राप्त है कि धर्म, दर्शन एवं संस्कृति जैसे क्लिष्ट व विशिष्ट विषयों को सर्वप्रथम उनके द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत कर उसे सर्व जन सुलभ किया गया जबकि इससे पूर्व इस पर संस्कृत निष्णात ब्राह्मण वर्ग का ही एकाधिकार था जिन्होंने इन्हें संकीर्ण एवं संकुचित कर दिया था और वेदों का लाभ जनसाधारण को नहीं मिल सका था जिसके वह अधिकारी थे।

हरिद्वार में एक श्रद्धालु भक्त द्वारा स्वामी जी से उनकी पुस्तकों का उर्दू अनुवाद कराने की प्रार्थना करने पर **उन्होंने आवेशपूर्ण शब्दों में कहा था कि अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। देवनागरी के अक्षर सरल होने से थोड़े ही दिनों में सीखे जा सकते हैं। हिन्दी भाषा भी सरल होने से सीखी जा सकती है। हिन्दी न जानने वाले एवं इसे सीखने का प्रयत्न न करने वालों से उन्होंने**

पूछा कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर यहां की भाषा हिन्दी को सीखने में परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है? आप तो मुझे अनुवाद की सम्मति देते हैं परन्तु दयानन्द के नेत्र वह दिन देखना चाहते हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक देवनागरी अक्षरों का प्रचार होगा।'' इस स्वर्णिम स्वप्न के द्रष्टा स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में एक स्थान पर लिखा कि ''**आर्यावर्त्त भर में भाषा का एक्य स्थापित करने के लिए ही उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों को आर्य भाषा (हिन्दी) में लिखा एवं प्रकाशित किया है''।** अनुवाद के सम्बन्ध में अपने हृदय में हिन्दी के प्रति सम्पूर्ण प्रेम को प्रकट करते हुए वह कहते हैं, **''जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी, वह इस आर्यभाषा को सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे।''** यही नहीं आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए उन्होंने हिन्दी सीखना अनिवार्य किया था। भारत वर्ष की तत्कालीन अन्य संस्थाओं में हम ऐसी कोई संस्था नहीं पाते जहां एकमात्र हिन्दी के प्रयोग की बाध्यता हो।

सन् 1882 में ब्रिटिश सरकार ने डा. हण्टर की अध्यक्षता में एक कमीशन की स्थापना कर उससे राजकार्य के लिए उपयुक्त भाषा की सिफारिश करने को कहा। इस हण्टर कमीशन के माध्यम से हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए स्वामी जी ने देश की सभी आर्य समाजों को पत्र लिखकर बड़ी संख्या में हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन हण्टर कमीशन को भेजने की प्रेरणा की और जहां से ज्ञापन नहीं भेजे गये उन्हें स्मरण पत्र भेज कर सावधान और पुनः प्रेरित किया। आर्य समाज फर्रूखाबाद के स्तम्भ बाबू दुर्गादास को भेजे पत्र में स्वामी जी ने लिखा, **''यह काम एक के करने का नहीं है और अवसर चूके तो यह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ (अर्थात् हिन्दी राजभाषा बना दी गई) तो आशा है, मुख्य सुधार की नींव पड़ जावेगी।''** स्वामी जी की प्रेरणा के परिणामस्वरुप देश के कोने–कोने से आयोग को बड़ी संख्या में लोगों ने हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन भेजे। **कानपुर से हण्टर कमीशन को दो सौ मैमोरियल भेज गए जिन पर दो लाख लोगों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में हस्ताक्षर किए थे। हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा किया गया यह कार्य भी इतिहास की अप्रतिम घटना है।** दयानन्द देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं को हिन्दी व संस्कृत की भांति देवनागरी लिपि में लिखे जाने के समर्थक थे जो राष्ट्रीय एकता की पूरक होती। उन्होंने एक प्रसंग में यह भी कहा था कि दयानन्द की आंखे वह दिन देखना चाहती हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश में चहुंओर देवनागरी अक्षरों का प्रचार व प्रयोग हो, इसका उल्लेख हम पूर्व में भी कर चुके हैं। अपने जीवन काल में स्वामी जी ने हिन्दी पत्रकारिता को भी नई दिशा दी। **आर्य दर्पण (शाहजहांपुर : 1878), आर्य समाचार (मेरठ : 1878), भारत सुदशा प्रवर्तक (फर्रूखाबाद : 1879), देश हितैशी (अजमेर : 1882) आदि अनेक हिन्दी पत्र आपकी प्रेरणा से प्रकाशित हुए एवं पत्रों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।** प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनेक पहलुओं पर स्वामी दयानन्द का अक्षुण्ण प्रभाव को उचित रूप से ही स्वीकार किया गया है। हिन्दी दिवस, दिनांक 14 सितम्बर के अवसर पर, **हिन्दी प्रेमी महर्षि दयानन्द** को हम शत–शत नमन करते हैं।

सौजन्य से– **THE HERITAGE SCHOOL**
14/6, New Road, Dehradun, India

स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन के लिए स्वास्थ्यवर्धक भोजन शाकाहार

कृपया सोचिये एवं उत्तर देने की कोशिश कीजिये

1. जब आप मृत प्राणियों को सड़क पर मरा हुआ देखते हैं तो क्या आप उन्हें खाने के लिये उत्साहित होते हैं?
2. क्या एक मरे हुए पक्षी को देखकर आपके मुँह में पानी आता है।
3. क्या आप पानी घूँट-घूँट भरकर पीने की जगह जीभ से चाट-चाटकर पीते हैं?
4. क्या आप अपने भोजन को बिना चबाये ही सीधे निगलकर पचा लेते हैं?
5. क्या आपको पसीना शरीर के रोम छिद्रों से न आकर आपकी जीभ के माध्यम से आता है ?

प्रिय मित्र! यदि आपने इन सवालों का जवाब 'नहीं' के रूप में दिया है... तो आपको बधाई, आप पसंद करें अथवा न करें, आप शरीर संरचना की दृष्टि से एक शाकाहारी हैं, मांसाहारी नहीं।

क्या आपने कभी सोचा

क्यों जंगल में रहने वाले मांसाहारी प्राणी कभी हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह, ब्रेनस्ट्रोक और मोटापे जैसी बीमारियों से पीड़ित नहीं होते और माँस खाने वाले मनुष्य तेजी से इन बीमारियों का शिकार होते जा रहे हैं? क्यों कई मेडिकल अनुसंधान मांसाहार को हमारे लिये घातक बता रहे हैं?

क्योंकि मनुष्यों में अधिकांश बीमारियाँ माँसाहार में पाये जाने वाले सैच्यूरेटेड फैट और हानिकारक कॉलेस्ट्रॉल से हो रही हैं।

यह सर्वाविदित सत्य है कि माँस अक्सर जानलेवा खतरनाक बैक्टीरिया जैसे कि ई कोलि, लिस्टीरिया आदि से शीघ्र संक्रमित और दूषित हो जाता है। और ये कई बैक्टीरिया माँस को पकाने पर भी नष्ट नहीं होते तथा हमारे अमाशय में विद्यमान एसिड़ भी मांसाहारी प्राणियों के अमाशय में विद्यमान एसिड़ की अपेक्षा लगभग 20 गुना कम होने के कारण इन्हें मारने में समर्थ नहीं होता है।

मांस में क्या है?

(क) मांस में सब्जियों की तुलना में लगभग तेरह गुना ज्यादा कीटनाशक पाये जाते हैं। अमेरिका जैसे देशों में 80% एण्टीबायोटिक्स का प्रयोग पशुओं पर किया जाता है।

(ख) जब जानवरों का वध किया जाता है तब भय व क्रोध के एन्जाइम्स उनकी ग्रन्थियों व अंगों से निकलकर उनके शरीर के सैल्स में भर जाते हैं।

(ग) और इसके साथ यह भी जान लें कि मांसाहारी भोजन फाइबर से रहित होता है तथा इसमें बहुत अधिक मात्रा में हानिकारक कॉलेस्ट्रॉल व सैच्युरेटेड फैट पाया जाता है।

वर्ल्ड हैल्थ ऑरगनाइजेशन (WHO) की रिपोर्ट के अनुसार मांसाहारी भोजन 159 प्रकार की विभिन्न बीमारियों का कारण है। जैसे कि-

- हड्डियों की कमजोरी	- क्षय रोग, टी.बी
- हृदय रोग	- कब्ज
- गुर्दो के रोग	- मोटापा
- रक्तवाहिनियों में जख्म	- गठिया
- एक्जीमा	- हिस्टीरिया, उन्माद
- लक्वा	- कैंसर आदि

और बहुत सारे मानसिक रोग जैसे- अत्यधिक क्रोध, अधीरता, बैचेनी, अशांति, चंचलता, कामुकता व आपराधिक मानसिकता आदि।

जरा सोचिये...

अगर आप एक मृत शरीर को छू लेते हैं तब आप स्नान करते हैं, हाथ धोते हैं। मगर जब आप उसे अपने भोजनालय में पकाते हैं, तब उसे खुशी-2 खा लेते हैं। क्या यह बुद्धिमता है?

सोचिये मांसाहार करके आप अपने शरीर को स्वस्थ बना रहे हैं या अस्वस्थ?

आप प्रकृति प्रेमी को यह पता होना चाहिये कि–

कार्बनडाईऑक्साइड से भी 21 गुना अधिक तीक्ष्ण मिथेन गैस का सर्वाधिक उत्पादन कत्लखानों के माध्यम से होता है। ये कत्लखाने 100 मिलियन टन से भी ज्यादा मिथेन गैस प्रतिवर्ष पैदा कर पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं।

इसलिये शाकाहारी बनना ग्लोबलवार्मिंग की समस्या से निबटने का एक असरदार तरीका है।

और भी जानिए कि–वाटर एजुकेशन फॉउण्डेशन के अनुसार एक पौण्ड मांस के उत्पादन में 2,464 गैलन पानी लगता है। जबकि एक पौण्ड गेहूँ के उत्पादन में मात्र 25 गैलन पानी की खपत होती है।

क्या यह तर्कसंगत व न्यायोचित है

एक ओर पशुओं को 40 मिलियन टन खाना प्रतिवर्ष दिया जाता है, जिससे अमीर लोग उन पशुओं का मांस खा सकें। इसके विपरीत अन्न की कमी के कारण गरीब देशों की लगभग 50 मिलियन आबादी प्रतिवर्ष भुखमरी का शिकार होती है। अगर अमीर देशों के लोग मांसाहारी भोजन खाना बंद कर दें तो दुनिया से भुखमरी का संकट समाप्त किया जा सकता है।

क्या आप जानते हैं

सालाना 5 मिलियन बच्चों की मौत भुखमरी के कारण हो जाती है। जिसका तात्पर्य है हरेक सेकेण्ड एक बच्चे की मौत! बावजूद इसके अमेरिका में 80% खाद्यान्न पशुओं को उनका मांस प्राप्त करने के लिये खिला दिया जाता है। जबकि खाद्यान्न की यह मात्रा पूरे विश्व को 5 बार शाकाहारी भोजन खिलाने में समर्थ है।

अब यह आपकी इच्छा पर निर्भर करता है कि आप पशुओं को उनका मांस प्राप्त करने के लिये खिलाकर मारना चाहते हैं या अपने इन मनुष्य भाई- बहनों को शाकाहारी होकर जीवन देना चाहते हैं।

सोचिये सोचिये सोचिये.....

आप एक करुणामय, बुद्धिमान व अच्छे इंसान हैं। कृपया प्राणियों पर दया करिये। आप महसूस कर सकते हैं वध के समय प्राणी की पीड़ा को। आप जानते हैं डिमाण्ड और सप्लाई के नियम को। आप समझ सकते हैं कि प्राणी के वध का मुख्य कारण कसाई है या खाने वाला मांसाहारी।

अब आप आहार से संबंधित बहुत कुछ सत्य तथ्यों को समझ गये हैं। कृपया सोचिये और अपने व अन्यों के सुख के लिये उचित निर्णय लीजिये।

- आप अपने स्वास्थ्य के लिये जागरुक हैं।
- आप आन्तरिक शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं।
- आपको प्रकृति, पर्यावरण व प्राणियों से प्रेम है।
- आप इस धरती को सबके जीने के लिये एक बेहतर जगह बनाना चाहते हैं।
- आपका हृदय करुणामय है।
- आप कर्म के सिद्धान्त 'जैसा करना वैसा भरना' को जानते हैं।
- आप प्रभु की विशेष कृपा व आशीर्वाद पाना चाहते हैं।

कृपया अपनी आहार से संबंधित इच्छाओं व पसंदों को विशाल हृदय व जागरुक मन के साथ पुनर्विचारें व सत्य की राह पर आगे बढ़ जायें।

आप इण्टरनेशनल वेजीटेरियन एसोसिएशन

के सदस्य बन उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घ जीवन, प्रेम, करुणा, मित्रता व शांति का विस्तार प्राणी मात्र के सुख के लिये कर सकते हैं। पूर्ण शाकाहारी मित्र सदस्यता प्राप्त करने हेतु IVA के ईमेल व फेसबुक पेज पर निवेदन भेजें अथवा क्षेत्रीय कॉर्डिनेटर्स से सम्पर्क करें।

अन्य जानकारी व अपने क्षेत्र में **"स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन"** विषय पर निःशुल्क **वर्कशॉप (कार्यशाला)** आयोजित करवाने हेतु हमारे क्षेत्रीय कॉडिनेटर्स व प्रतिनिधियों से सम्पर्क करें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

1. आचार्य आशीष आर्य, तपोवन आश्रम, देहरादून 9410506701
2. श्री सत्यपाल जी आर्य, दिल्ली 9810047341
3. सुश्री कंचन जी आर्या, दिल्ली 9289804948

पत्राचार हेतु पता

कार्यालय क्रमांक 15, मेहरा पेट्रोल पंप के पीछे, ताजपुर रोड, शर्मा मार्केट, दिल्ली–110044, भारत

वेबसाइट : www.internationalvegetarianassociation.com
ई-मेल : iva.delhi@gmail.com; internationalvegassociation@gmail.com
फेसबुक : www.facebook.com / internationalvegassociation
फेसबुक : iva-internationalvegetarianassociation

गठिया और उसका उपचार

उम्र बढ़ने के साथ ही शरीर के ऊतक कमजोर पड़ने लगते हैं। शरीर के विभिन्न जोड़ घिसने लगते हैं। ऐसी स्थिति में जोड़ों में दर्द रहने लगता है, भोजन के प्रति अरुचि होती है, प्यास अधिक लगती है, हाथ–पैर, जाँघ, एड़ी तथा कमर आदि के जोड़ों में दर्द होने लगता है, घुटनों मे शोथ (सूजन) भी हो जाता है। रोग बढ़ जाने पर चलते–फिरते समय भयंकर कष्ट होता है। बढ़ती उम्र के कारण जो गठिया होता है उसे आस्टियों आर्थराइटिस कहते हैं, जोड़ों में सूजन या प्रदाह के कारण उत्पन्न गठिया को रियूमेटायड आर्थराइटिस कहते हैं। जोड़ों में यूरिक अम्ल के जमा हो जाने के कारण उत्पन्न गठिया को गाउटी आर्थराइटिस कहते हैं। हीमोफीलिया में रक्तस्राव से जोड़ों में खून के थक्के जम जाने के कारण उत्पन्न गठिया को एक्यूट (गम्भीर) आर्थराइटिस कहते हैं। क्षयरोग और आमवात में भी हड्डी के जोड़ प्रभावित होते हैं।

कन्धों में जकड़न– कन्धों को घेरने वाली मांसपेशियों में सूजन आ जाती है। कन्धे स्वाभाविक रूप से हिल–डुल नहीं पाते। हाइड्रोकार्टिसोनका इंजेक्शन तथा अल्ट्रासॉनिक किरणों से सेंकने पर दर्द में लाभ पहुँचता है।

आस्टियों आर्थराइटिस– लगभग 50–55 वर्ष के बाद यह शुरू होता है। घुटने, कन्धे और रीढ़ की हड्डी में दर्द होता है। जोड़ों का कार्टिलेज घिसने के बाद हड्डी घिसनी शुरू हो जाती है, किनारे धरदार हो जाते हैं। जोड़ हिलने–डुलने पर चटखने की आवाज होती है। धीरे–धीरे दर्द बढ़ता जाता है। जोड़ों की गति कम होती जाती है। ध्यान रखना चाहिये कि ऐसी स्थिति में खूब चलें, हल्का–सा व्यायाम करें और औषधि का सेवन नियपूर्वक करते रहें। ठीक हो जाने के बाद भी कभी पुनः दर्द शुरू हो सकता है। उठने–बैठने, चलने–फिरने में कष्ट होने लगता है। घुटने पूर्णतः क्षतिग्रस्त होने पर औषधि की अपेक्षा शल्यक्रिया आवश्यक हो जाती है।

रियूमेटायड आर्थराइटिस– यह रोग लगभग 40 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में विशेषकर पाया जाता है। घुटने, टखने और हाथ के जोड़ विशेषरूप से प्रभावित होते हैं। रोगी को निरन्तर कुछ–न–कुछ करते रहने चाहिये। इसके साथ ही आराम की भी आवश्यकता होती है। कार्टिसोन के इंजेक्शन से लाभ प्रतीत होता है। असाध्यावस्था में शल्यक्रिया अपेक्षित होती है।

रीढ़ की हड्डी की गठिया– रोगी आगे की ओर झुक जाता है। रीढ़ की हड्डी के अतिरिक्त कूल्हे और कन्धे भी प्रभावित हो जाते हैं। यह रोग विशेषरूप से पुरुषों को होता है।

गाउट– घुटने के जोड़ के कार्टिलेज में यूरिक अम्ल के दाने जमा हो जाने के कारण यह अपंग कर देने वाला रोग होता है। चिकित्सा में यूरिक अम्ल के दाने न जमा होने पायें इसका उपाय करते हैं। इसके लिए रक्त में यूरिक अम्ल की मात्रा कम करने का प्रयास करते हैं। मादक पदार्थ तथा मांसाहार इस रोग की उत्पत्ति में प्रमुख रूप से सहायक हैं। इन्हें तुरंत बंद कर देना चाहिये। शाकाहार और तनावरहित दिनचर्या होनी चाहिये।

जोड़ों की टी०वी०– यह रोग कुपोषण से होता है। रोग का आक्रमण जोड़ों पर होता है। फेफड़ों का क्षयरोग भी हड्डियों के जोड़ तक पहुँच जाता है। इसके भी लक्षण गठिया से मिलते–जुलते हैं। क्षय की दीर्घकालीन चिकित्सा से इसका उपचार किया जाता है।

चिकित्सा– (1) प्रातः एक पुटिया लहसुन आधा किलो दूध में डालकर उबालें। दूध के आधा पाव रह जाने पर उसे छानकर पी लें। दूसरे दिन दो पुटिया लहसुन, तीसरे दिन तीन पुटिया लहसुन इसी प्रकार ग्यारहवें दिन ग्यारह पुटिया लहसुन दूध में उबालकर उसे छानकर दूध पी जाएँ। बारहवें दिन से लहसुन की संख्या एक–एक करके कम करते जाएँ।

(2) पुनर्नवा की जड़ 10 ग्राम को 100 ग्राम पानी में उबालें और 25 ग्राम शेष रहने पर छानकर पी लें।

(3) योगराज गुग्गल सुबह–शाम दो–दो गोली गरम पानी से लें।

(4) अश्वगन्ध, चोपचीनी, पीपलामूल, सोंठ– इसका समान मात्रा में चूर्ण सुबह–शाम दूध के साथ पीयें।

(5) जोड़ों पर सेंक करके रेड़ी के पत्तों पर घी लगाकर बाँधें।

(6) रात को सोते समय 10 ग्राम मेथी का दाना निगलकर पानी पी लें।

(7) दर्द के स्थान पर नारायण तेल की मालिश करें।

पथ्य– गेहूँ, बाजरे की रोटी, मेथी, चौलाई, करैला, टिंडा, सेब, पपीता, अंगूर, खजूर, लहसुन इत्यादि वस्तुओं का सेवन हितकर है।

अपथ्य– चावल, आलू, गोभी, मूली, सेम, चना, उड़द की दाल, केला, सन्तरा, नींबू अमरूद, टमाटर, दही तथा समस्त वायुकार पदार्थ, दिवाशयन, अधिक परिश्रम इत्यादि रोग को बढ़ाते हैं।

अमृतधारा के विविध प्रयोग

अमृतधारा कई बीमारियों में दी जाती हैं, जैसे बदहजमी, हैजा और सिर–दर्द।

1. थोड़े से पानी म ें तीन–चार बूँद अमृतधारा की डालकर पिलाने से बदहजमी, पेट–दर्द, दस्त, उल्टी ठीक हो जाती है। चक्कर आने भी ठीक हो जाते हैं।
2. एक चम्मच प्याज के रस में दो बूँद अमृतधारा डालकर पीने से हैजा में फायदा होता है।
3. अमृतधारा की दो बूँद ललाट और कान के आसपास मसलने से सिर–दर्द में फायदा होता है।
4. मीठे तेल में अमृतधारा मिलाकर छाती पर मालिश करने से छाती का दर्द ठीक हो जाता है।
5. सूँघने पर साँस खुलकर आता है तथा जुकाम ठीक हो जाता है।
6. थोड़े से पानी में एक–दो बूँद अमृतधारा डालकर छालों पर लगाने से फायदा होता है।
7. दाँत–दर्द में अमृतधारा का फाया रखकर दबाये रखने से राहत मिलती है।
8. चार–पाँच बूँद अमृतधारा ठंडे पानी में डालकर सुबह–शाम कुछ दिन पीने से श्वास, खाँसी, दमा और क्षय–रोग में फायदा होता है।
9. आँवले के मुरब्बे में तीन–चार बूँद अमृतधारा डालकर खिलाने से दिल के रोग में राहत मिलती है।
10. बताशे में दो बूँद अमृतधारा डालकर खाने से पेट के दर्द में आराम मिलता है।
11. भोजन के बाद दोनों वक्त ठंडे पानी में दो–तीन बूँद अमृतधारा डालकर पीने से मन्दाग्नि, अजीर्ण, बादी, बदहजमी एवं गैस ठीक हो जाती है।
12. दस ग्राम गाय के मक्खन और पाँच ग्राम शहद में तीन बूँद अमृतधारा मिलाकर प्रतिदिन खाने से शरीर की कमजोरी में फायदा होता है।
13. अमृतधारा की एक–दो बूँद जीभ में रखकर, मुँह बंद करके सूँखने से चार मिनट में ही हिचकी में फायदा होता है।
14. दस ग्राम नीम के तेल में पाँच बूँद अमृतधारा मिलाकर मसलने से दर्द में राहत मिलती है।
15. दस ग्राम वैसलीन में चार बूँद अमृतधारा मिलाकर, शरीर के हर तरह के दर्द पर मालिश करने से दर्द में फायदा होता है। फटी बिवाई और फटे होंठों पर लगाने से दर्द ठीक हो जाता है तथा फटी चमड़ी जुड़ जाती है।

आपकी जानकारी के लिए कुछ लाभदायक बातें-

1. एक तोला हल्दी भूनकर और उसमें एक तोला सोंठ और खाँड़ मिलाकर एक माशा सुबह और एक माशा सन्ध्या को पानी के साथ खिलाने से जोड़ों और रीढ़ के दर्दों को बहुत लाभ होता है।
2. हल्दी को भूनकर पीसकर दाँतों के नीचे दबाने से दाँतों का दर्द बन्द हो जाता है और दाँत के कीड़े मर जाते है।
3. अरहर के पत्तों का अर्क पिलाने से अफीम का नशा कम हो जाता है और मूली के पत्ते खाने से हिचकी रूक जाती है।
4. अरहर की दाल आधी छटाँक को पानी में उबाल कर इसका पानी पिलाने से भाँग का नशा कम होता है।
5. अरहर की जड़ को पानी में घिस कर रोजाना आँख में लगाने से आँख का धुँधलापन दूर होता है।
6. केसर असली 6 माशा, संरजन शीरी दो तोला, रेबंद चीनी एक तोला सबको बारीक करके 32 पुड़िया बना लें। एक पुड़िया सुबह एक शाम गर्म दूध के साथ गठिया और वायु के रोगी को 16 दिन तक रोजाना खिलायें, लाभ होगा।
7. दस बूँद बरगद का दूध बताशे में डालकर रोजाना गाय के दूध के साथ खिलाने से जिस्मानी कमजोरी और पेशाब की जलन व रूक रूककर पेशाब आने को लाभ देता है।
8. अदरक को जलाकर उसकी राख को आँखों में रोजाना रात को लगाने से धुँधलापन और आँखों से पानी गिरने को लाभ होता है।
9. अंजीर को दूध में पकाकर फोड़ों पर बाँधने से फ़ोड़ा पककर जल्दी फूट जाता है।
10. मूली ज्यादा खाने पर थोड़ा सा गुड़ खालें। केले ज्यादा खा लेने पर दो छोटी इलायची खालें। फौरन हज़म होंगे तथा गन्ना ज्यादा खा लेने पर चार बेर खालें।
11. अगर आपने आम ज्यादा खा लिए हों तो ऊपर से दो चार जामुन खालें और जामुन ज्यादा खा लिए हों तो आम खालें जल्दी हज़म हो जायेगें।
12. तरबूज ज्यादा खा लेने पर दो माशे नमक खायें और खरबूजा ज्यादा खा लेने पर चीनी का शर्बत बनाकर पियें।
13. लौंग और छुआरा घिसकर लगाने से गुहेरी ठीक हो जाती है।
14. पीपल के पेड़ की छाल और लाल गूदा एक–एक सेर छाया में सुखा लें। कूट छान कर आधा पाव मिश्री मिला दें, एक तोला सुबह एक तोला शाम ताजा पानी के साथ खिलाने से स्त्रियों के सफेद पानी को लाभ होता है। एक माह जरूर सेवन करायें।
15. हींग, मुलैठी और सोंठ एक–एक माशा बारीक पीसकर चने के बराबर गोली शहद या गुड़ में बना लें। एक गोली सुबह, एक दोपहर और एक शाम को पानी के साथ चार–पाँच दिन खिलाने से जुकाम के लिए लाभप्रद है।
16. 21 नीम पत्ते एक छटांक पानी में सुबह और शाम घोंटकर एक हफ्ते रोजाना पीने से खुजली के मर्ज को बहुत फायदा होता है। खून को साफ करता है।
17. स्थाई कब्ज को तोड़ने के लिए एक बड़ी हरड़ कूटकर थोड़ा नमक मिलाकर रात को पानी या दूध से चन्दरोज सेवन करें।
18. अगर हाथ पैर फट जाते हों तो राल को बारीक पीसकर देशी घी बराबर का मिलाकर फटने वाली जगहों पर लगायें।
19. मोर के पंख जलाकर उसकी दो रत्ती राख को शहद में मिलाकर चाटने से हिचकी के रोग को लाभ होता है।
20. बरगद की डंडी का दातून बनाकर रोजाना दातून करने से हिलते हुए दांत मजबूत होते है अगर दाँत ने जड़ न छोड़ी हो।

21. पेचिस के लिए अनन्तमूल के सूखे पत्ते पांच रत्ती और अफीम 0.25 रत्ती (यह एक खुराख है) ऐसी तीन–तीन घंटे बाद पानी से खिलायें। दही चावल खाने को दें। लाभ होगा।

22. सरसों का तेल और पिसी हुई कच्ची हल्दी मिलाकर रोजाना दाँतों पर मलने पर और साथ में फिटकरी के पानी के कुल्ले करने से दाँतों के बहुत से रोग नष्ट हो जाते हैं और पायरिया को भी काफी लाभ होता है।

23. अगर शराब ज्यादा पीली हो तो एक तोला फिटकरी को पानी में घोलकर पिला दें या दो सेब का रस निचोड़ कर पिलाने से शराब का नशा कम होता है।

24. एक सेर गरम पानी में नमक तीन माशा और कपूर चार रत्ती, कार्बोलिक एसिड सिर्फ पाँच बूँद रोजाना नाक में ड्रापर से टपकायें नाक के हर मर्ज के लिए लाभदायक है।

29. 2.5 तोला गुड़, 2.5 तोला प्याज दोनों को दाँतों के नीचे चबाकर खाने से जुकाम को जल्दी लाभ होता है।

30. रसौत एक तोला, हल्दी तीन माशा, फिटकरी का फूला 3 माशा, अफीम चार रत्ती, गुलाबजल दस तोले, इनको शीशे के बर्तन में रात को भिगोकर रखें, सुबह मसलकर मोटे कपड़े में छान कर एक माशा कपूर मिलाकर बोतल में भर लें। दुखती आंखों, रोहे, पानी का गिरना, आंख में दर्द, होने पर दो–दो बूँद दिन में चार बार ड्रापर से टपकायें जल्द आराम होता है।

31. खटट्ा अनार का रस 2 तोला और गुड़ दो तोला चीनी के बर्तन में डालकर पतले कपड़े या शीशे से ढककर धूप में दो हफ्ता रखें फिर यह दवा सलाई से आँखों में लगायें। नजर तेज करती है। चश्मे लगाने वाले भाई और दूसरे रोगी जरूर सेवन करें।

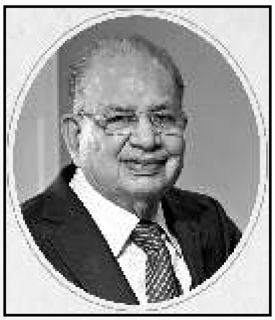

श्री ओ.पी. मुंजाल
26 अगस्त 1928 – 13 अगस्त 2015

विश्व के सबसे बड़े साईकिल निर्माता श्री ओ.पी. मुंजाल दिवंगत

श्री ओमप्रकाश मुंजाल जी 87 वर्ष की आयु में 13 अगस्त 2015 को दिवंगत हो गए। उन्होंने कठिन परिश्रम, त्याग, सद्व्यवहार एवं ईमानदारी के बल पर साईकिल निर्माण के क्षेत्र में हीरो साईकिल को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में सम्मानीय स्थान दिलाया। मुझे पिछले वर्ष लुधियाना में उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह बहुत ही आत्मीयता और स्नेह के साथ काफी समय तक तपोवन आश्रम के कार्यकलापों के बारे में वार्ता करते रहे तथा निकट भविष्य में देहरादून आने का आश्वासन भी दिया लेकिन अपनी बीमारी के कारण वह इस वर्ष तपोवन आश्रम नहीं आ पाए। तपोवन आश्रम देहरादून की समस्त कार्यकारिणी सदस्य इस महामानव के प्रति हार्दिक सम्वेदना व्यक्त करते हैं तथा अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

प्रेमप्रकाश शर्मा
सचिव,
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन
देहरादून

आर्ष परम्परा के संवाहक
स्व० आचार्य राजवीर शास्त्री

मान्यवर,

लेखनी के धनी, गुरुकुल झज्जर के आदिकालीन सुयोग्यतम एवं यशस्वी स्नातक, महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रोक्त आर्ष परम्परा के संवाहक, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की मासिक पत्रिका, 'दयानन्द संदेश' के अनेक दशकों तक अवैतनिक सम्पादक, 'वैदिक कोष' के निर्माता, पातंजल योग दर्शन और उपनिषदों के सुविख्यात भाष्यकार, मनुप्रोक्त धर्मशास्त्र के प्रख्यात पंडित और व्याकरण के उद्‌भट विद्वान् आचार्य राजवीर शास्त्री का 25 सितम्बर 2014 को निधन हो गया है। ऐसे महनीय व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी आचार्य प्रवर की जयंती 04 अप्रैल 2016 को आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर उनकी स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने हेतु एक स्मृति ग्रन्थ, **''आर्ष परम्परा के संवाहक स्व० आचार्य राजवीर शास्त्री''** का प्रकाशन किया जाएगा। अतः आर्यजगत् के समस्त विद्वानों/आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि कृपया निम्न रूप में अपना सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें–

1. आचार्य प्रवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में लेख भेजकर।
2. आचार्य जी के सबन्ध में स्वानुभूत संस्मरण भेज कर।
3. यदि किसी सज्जन के पास आचार्य जी का कोई लेख, सम्पादकीय, पत्राचार, जीवन प्रवाह के किसी भी पहलू पर फोटो आदि उपलब्ध हों तो उन्हें भिजवाने की कृपा करें।

निवेदन है कि उक्त सामग्री एवं लेख आदि कृपया 31 अक्टूबर 2015 तक अवश्य प्रेषित करने का कष्ट करें।

निवेदक

डा0 दिनेशचन्द्र शास्त्री
मृदुल भवन, योगी विहार(क्लासिक होटल के पीछे)
पो0– ज्वालापुर–249407, हरिद्वार,
उत्तराखण्ड, मो0 09410192541
E-mail : dineshcshastri@gmail.com

मृतक श्राद्ध

श्राद्ध देवें श्मशान गमन पर, है बुद्धि उनकी खोटी।
निर्मित नियम किया उल्टा, धिक्कार उसे कोटी–कोटी।।
मात–पिता, चाचा–ताऊ–दादा को रखते तंग।
नहीं पहनने को वस्त्र, सर्दी में फिरते नंग–धड़ंग।।
कटु वचन के बाण मारते, पितृ अश्रु पी रह जाते।
तन पर मार पडे ठोकर की , जीवित ही वे दह जाते।।
काया कृश हुई कष्टों से, आधि–व्याधि ने दबा लिया।
दो कपट की अश्रु डाल रहे, जब काल बली ने चबा लिया।।
आँखों वाले अन्धों की, बुद्धि पर माटी पड़ी हुई।
गंगा में हाड़ बहाते हैं, कुछ बहती लाश सड़ी हुई।।
मृतक श्राद्ध करने की ठानी, चले त्रास मिटाने की।
पितर पुलकित करने को, तत्पर हैं माल लुटाने को।।
विपुल–निधि का अपव्यय कर, बहुतों को भोज कराते हैं।
सामर्थ्य प्रतिकूल काट–काट कर, यश भी लूटना चाहते हैं।।
विद्याहीन पेटू पण्डित, भर पेट ठसाठस हर्षाया।
दिल में प्रफुल्लित दानी, जिसने था वंशज तरसाया।।
दान दक्षिणा काफी दे दी हुण्डी उसकी करा देई।
पितृ–ऋण तारण निमित्त, दादा की झोली भरा देई।।
आये कनागत, हुआ स्वागत, कौवे और पाखण्डियों का।
मुर्दों के खाने को पहुँचे अन्न धरती की मण्डियों का।।
घर लुटवाके, सिर पिटवाके, करवाते क्यों लोग हंसाई।
अपनी करनी, पार उतरनी बादल संग चलती परछाई।।

रामफल आर्य, गामडी (सोनीपत)

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

शरदुत्सव (अथर्ववेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)
आश्विन कृष्ण पक्ष दशमी से आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी विक्रमी सम्वत् 2072 तक
तदनुसार बुधवार 7 अक्टूबर से रविवार 11 अक्टूबर 2015 तक मनाया जायेगा।

यज्ञ के ब्रह्मा एवं योग साधना निदेशक : स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रवचनकर्ता	:	आचार्य उमेश चन्द कुलश्रेष्ठ वैदिक प्रवक्ता आगरा
वेद पाठ	:	महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ के संयोजक	:	श्री उत्तम मुनि: जी।
भजनोपदेशक	:	पण्डित रूवेल सिंह आर्यवीर
भजन एवं प्रवचन कार्यक्रम के संचालक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा

बुधवार 7 अक्टूबर से रविवार 11 अक्टूबर 2015 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रात: 5.00 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक
यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 8.00 बजे से 10.00 बजे तक

ध्वजारोहण	- बुधवार 7 अक्टूबर 2015 को प्रात: 9:00 बजे।
गायत्री यज्ञ	- बुधवार 7 अक्टूबर 2015 को प्रात: 10 से 12 बजे तक
तपोवन विद्या निकेतन का वार्षिकोत्सव	- गुरुवार 8 अक्टूबर 2015 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
उद्बोधन	- डॉ. वीरपाल विद्यालंकार जी, आचार्य डॉ. धनन्जय जी एव आचार्य उमेश चन्द कुलश्रेष्ठ
महिला सम्मेलन	शुक्रवार 9 अक्टूबर 2015 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सन्तोष रहेजा जी (दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, डॉ. मंजु नारंग, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती सरोज आर्या जी आदि
शोभायात्रा	- शनिवार 10 अक्टूबर 2015 को प्रात: 10 बजे तपोभूमि के लिये शोभायात्रा जायेगी
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 10 अक्टूबर 2015 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशिका	- श्रीमती मिथिलेश आर्य एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार
पूर्णाहुति एवं ऋषिलंगर	- रविवार 11 अक्टूबर 2015 को यज्ञ की पूर्णाहुति, भजन, प्रवचन एवं ऋषिलंगर

नोट : यज्ञ के अतिरिक्त समस्त कार्यक्रम महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन में सम्पन्न होंगे।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, सन्तोष रहेजा, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, गोपाल कृष्ण डांडा, विजय कुमार, रामभज मदान

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

ओ३म्

'स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (चम्बा) को श्रद्धांजलि'

आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी, प्रसिद्ध विद्वान, ऋषि भक्त, यज्ञप्रेमी, वृहत यज्ञों के आयोजक, सौम्य मूर्ति, दयानन्द मठ, चम्बा के प्राण व संचालक, सभी आर्यों के प्रेरक एवं सम्मानीय स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी का 78 वर्ष की आयु में दयानन्द मठ चम्बा (हिमाचल प्रदेश) में 5 अगस्त, 2015 को देहावसान हो गया। स्वामी जी के न रहने से आर्य समाज की भारी क्षति हुई है। इसकी पूर्ति सम्भव प्रतीत नहीं होती। आपने जीवन भर वेद और महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित और स्वामी सर्वानन्द जी द्वारा पोषित परम्पराओं का पूरी निष्ठा व समर्पित भाव से पालन किया और आर्यसमाज के यश व कीर्ति में वृद्धि की। **ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके द्वारा संचालित मठ और उसकी सभी गतिविधियां यथापूर्व सफलता के साथ चलती रहें।**

हम वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून के सभी अधिकारीगण तथा पवमान मासिक–पत्रिका परिवार की ओर से श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनकी आत्मा की सदगति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं।

विनीतः

वैदिक साधन आश्रम तपोवन–देहरादून
एवं पवमान (मासिक) परिवार

स्वयं सुमेधानन्द बनो!

जिस पर गर्व किया करते वो स्वाभिमान सम्मान गया।
धुन का धनी त्याग की प्रतिमा देवोपम इन्सान गया।
हिम का आंचल गया देश का शौर्य शिखर ज्यों टूटा है,
किससे उपमा दूँ मित्रो उपमेय गया उपमान गया।

शब्द– शब्द समिधा जैसा था ज्यों सुगन्ध से भरा पवन।
गैरिक वस्त्रों में मुस्काता रोम–रोम वैदिक आंगन।
आप हमारे बीच रहे तो हम सबसे धनवान रहे,
चले गये तो यूँ लगता है हम हो गये बहुत निर्धन।

आज आप बिना स्वामी जी सब खाली–खाली लगता है।
सबको उत्तर देने वाला आज सवाली लगता है।
एक जुझारू जूझ–जूझकर पाखण्डों को हरा गया,
आप गये क्या सारा मौसम धूर्त मवाली लगता है।

पावक की लपटों में पड़कर सोना कुन्दन बन जाता है।
भाव शुद्ध हो नन्हा धागा रक्षा–बन्धन बन जाता है।
संघर्षों की भट्ठी में तप जाना छोटी बात नहीं है,
त्याग–तपस्या से मानव माथे का चन्दन बन जाता है।

–डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी', दिल्ली
मो० 09810835335

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि	क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	आर्यसमाज सुभाष नगर, देहरादून	500	37.	श्री स्वतन्त्र कुकरेजा	500
2.	श्री जगदीश मदान, जगाधरी	1000	38.	मुनि मोल्हड़ सिंह, सहारनपुर	1200
3.	श्रीमती रेणु	500	39.	श्रीमती सावित्री सुमन	1000
4.	श्रीमती शालिनी शाह, देहरादून	500	40.	श्रीमती कमला आर्य	500
5.	श्रीमती मनीषा चौहान, देहरादून	1000	41.	श्रीमती शान्ती	500
6.	श्री आशु कुमार	600	42.	श्रीमती शशि गोयल	500
7.	श्रीमती स्नेहलता गोगिया, देहरादून	500	43.	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा, देहरादून	5000
8.	श्री जय भगवान शर्मा, देहरादून	501	44.	मै. सीताराम जिन्दल फाउण्डेशन	10000
9.	श्री राजकुमार भण्डारी, देहरादून	50000	45.	आर.एस.एस. दिल्ली	1100
10.	श्रीमती रविकान्ता अरोड़ा, दिल्ली	100000	46.	श्री स. चड्ढा, दिल्ली	5100
11.	श्री आर.के. गुप्ता, दिल्ली	1300	47.	श्री कृष्ण बलदेव बत्रा, दिल्ली	1200
12.	श्री विभु	500	48.	श्रीमती सुलेखा चोपड़ा, दिल्ली	11000
13.	श्री के.पी. सिंह, देहरादून	600	49.	श्री पारस चोपड़ा	1100
14.	श्री जवाहरलाल, सोनीपत	500	50.	श्री आनन्द	500
15.	श्री टेकचन्द, दिल्ली	5000	51.	श्री किशन लाल गुलाटी, अहमदाबाद	500
16.	श्री कुलदीप सूद	1100	52.	श्री ए.के. अग्रवाल	500
17.	डॉ. विनोद कुमार शर्मा, देहरादून	5000	53.	श्रीमती गीता खन्ना	500
18.	श्री के.के. अग्रवाल, देहरादून	1000	54.	श्री आनन्द स्वरूप एवं श्रीमती निर्मला	4000
19.	श्रीमती कृष्णा आर्या, दिल्ली	1100	55.	श्री शरद चन्द	500
20.	श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ	1000	56.	श्री मुकेश बंसल, दिल्ली	500
21.	श्रीमती संतोष रहेजा, दिल्ली	500	57.	श्रीमती रमा मुंजाल, लुधियाना	40000
22.	श्री यशवन्त सिंह	4000	58.	श्री सा. चड्ढा, दिल्ली	5000
23.	मै. तेजराम भूषण लाल, देहरादून	4910	59.	श्रीमती रमा लीना सेठ, नई दिल्ली	10000
24.	श्री सतेन्द्र भाटिया	2050	60.	आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव	25000
25.	श्रीमती शोभा	1000	61.	आर्य समाज महावीर नगर, दिल्ली	1100
26.	श्री ज्ञान प्रकाश कुकरेजा	1000	62.	श्री यशपाल आर्य, दिल्ली	1100
27.	सुश्री रेणु शाह, देहरादून	1000	63.	श्री पी.पी. मल्होत्रा	500
28.	श्री योगराज अरोड़ा, दिल्ली	100000	64.	श्रीमती कमल	500
29.	श्रीमती पुष्पा गोस्वामी एवं		65.	श्री धर्मेन्द्र गोयल, देहरादून	1100
	श्रीमती चन्द्रप्रभा	600	66.	श्री ललित आर्य	500
30.	श्री हिमांशु	1000	67.	श्री सुरेश कुमार	500
31.	श्री दुर्जन सिंह, लखनऊ	1100	68.	श्रीमती उर्मिला सरीन, दिल्ली	6000
32.	श्री सत्यजीत आर्य	1100	69.	श्री सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा, दिल्ली	2100
33.	श्री ओमप्रकाश पालीवाल	1100	70.	श्रीमती मंजू अरोड़ा, दिल्ली	2100
34.	श्री कन्हैया लाल गर्ग	500	71.	श्रीमती उर्मिला आहुजा	1810
35.	श्री आर.डी. ऋषि, पंचकुला	5100	72.	श्रीमती किरन कपूर	1200
36.	आर्य समाज राजपुर टाऊन	2100	73.	श्री प्रेमप्रकाश शर्मा	500

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

पवमान पत्रिका के उत्तराखण्ड के वार्षिक ग्राहकों की सूची जिनके द्वारा 2015 तक का शुल्क जमा नहीं किया गया है

Custmer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
UKY 2	श्री सी0एस0 तोमर,	लैहमन पुल बाबूगढ, विकासनगर,	21-4-2012	May-13	250
UKY 14	श्री सिन्हा सिंह तोमर	निकट सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज बाबूगढ विकासनगर जिला	07.10.2011	Oct-12	350
UKY 60	श्री किशन गुप्ता	सेवा निवृत्त पोस्ट मास्टर विकासनगर	18-7-2013	Jul-14	300
UKY 118	श्री सुमीत कुमार वर्मा	3–बी जनता, सब्जी भण्डार, विकासनगर,	04.02.2011	Mar-13	250
UKY 172	श्री गुड्डु आर्य	नई कालोनी, भीमावाला,विकासनगर,विकासनगर,	11/2/2011	Feb-12	350
UKY 9	डॉ0 सुरेन्द्र सैनी	हरिपुर, कालसी गेट, कालसी	18.04.2010	Mar-12	350
UKY 61	श्री विनीत शर्मा	एडवोकेट कालसी	05.05.2012	Apr-13	250
UKY 100	अरूण टैन्ट हाउस	कालसी रोड़ डाकपत्थर	13-09-2012	Sep-13	250
UKY 59	डॉ0 ब्रजपाल सिंह	केयर आंफ श्रीमती प्रेमलता गुप्ता पो–डाकपत्थर जिला	26-10-2013	Oct-14	300
UKY 50	श्री बारु सिंह तोमर	ग्राम तरला छरबा वाया सहसपुर	12/3/2012	Mar-13	350
UKY 136	नाकरा	ग्राम सोरना अपर पो0ओ0 डोमरी, वाया सहसपुर,	24.04.2011	May-12	350
UKY 11	आर.पी. आर्य	741– इन्दिरानगर कालोनी, पो0ओ0 न्यूफोरेस्ट	23.09.2011	Sep-12	350
UKY 13	श्रीमती रजनी मित्तल जी	जी–302 विन्डलास रेजिडेन्सी कर्जन रोड़	9/4/2014	Apr-15	150
UKY 18	पवन कुमार	हनुमान मंदिर, हरीधाम कालोनी, गुमानीवाला, ऋषिकेश	13.01.2012	Jan-13	250
UKY 19	दयाशंकर विद्यालंकार	वैद निदम आश्रम, श्री राम विहार कालोनी, हरिपुर कला, वाया रायवाला	10.01.2012	Dec-12	350
UKY 25	भुवनेशप्रसाद वेदपाठी	म.नं. 116 /डी, पो0ओ0 चीला वाया बैराज,	05.01.2011	Dec-12	350
UKY 27	सुखदेव कुमार	ग्राम बिनारत्रि, चुडियाला,	20.04.2011	May-12	350
UKY 31	श्री शादीलाल शर्मा	5/2– तेगबहादुर रोड, ब्लॉक –7	11/4/2013	Apr-14	300
UKY 35	राजेश सैनी	हनुमान मंदिर कलोनी, निकट गिलास फैक्ट्री हरीधाम कालोनी, गुमानीवाला,	19-2-2013	Feb-13	250
UKY 37	डी.के. गर्ग	83 इन्दिरानगर,	30-12-2013	Dec-14	300
UKY 44	श्री बलवीर सिंह राणा	गढ़ निवास डाक आई0 आई0 पी	30-12-2013	Dec-14	350
UKY 45	तेज राम भूषण लाल	3–आढ़त बाजा़र	16.07.2012	May-13	250
UKY 51	विजय कुमार ठक्कर	सावन फोरवडिग ऐजैन्सी मुर्खजी रोड, ऋषिकेश	25.07.2011	Jul-12	350
UKY 58	अनिल कुमार पाल	लेन नं. 2, अशोक विहार, अजबपुर कला, बाई पास रोड,	27-6-2014	Jun-14	300
UKY 62	पी0डी0 गुप्ता	6–प्रीत विहार इन्दिरा गांधी मार्ग पो0ओ0 माजरा निरंजनपुर	30.03.2012	May-13	250
UKY 63	आनन्द जनरल स्टोर्स	रा0ई0का0 के सामने, लांघा, डाकपत्थर	23.04.2011	May-12	350
UKY 64	राम सरन	20– ए, रैस्ट कैम्प,	07.06.2012	Jun-14	300
UKY 67	किशन चन्द हंस	म.नं. एम–102, हरिलोक कालोनी, (सब्जी मण्डी के पास) ज्वालापुर	16.05.2012	May-13	250
UKY 73	मास्टर योगेश्वर दयाल	ग्राम जस्सोवाला, पो0ओ0 हरबर्टपुर	11.06.2011	May-12	350
UKY 74	दिलबाग सिंह पंवार	द्वारा पंवार एण्ड सैनिटरी हार्डवयेर स्टोर, हरिद्वार बाई पास रोड,	23-10-2013	Oct-14	300
UKY 76	राम कुमार तंमग	गांव– विलासपुर काडली, पो.ओ. घंघौडा	13.12.2011	Dec-12	350
UKY 79	वीरेन्द्र कुमार सिंघल	म.नं. 33 / 33, मान सिंह वाला, डी.ए.वी. इन्टर कालेज गेट के सामने	12.11.2011	Dec-12	350
UKY 80	करण सिंह क्षेत्री	म.नं. 34 / 40 ईदगाह ब्लॉक –3, कुम्हार मण्डी, चकराता रोड,	22.01.2012	May-13	250
UKY 84	अनिल गुप्ता	311 पार्क रोड,	24.04.2011	May-12	350
UKY 85	विजय प्रकाश शाह जी	सहायक अध्यापक राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कुलासु पो.कुलास वाया पार्टीसैन्ड	29.10.2011	Jul-12	350
UKY 88	मदनलाल शर्मा	20 नेशनल रोड,	12.08.2012	Aug-13	250
UKY 89	किरण दुग्गल	आई0सी0एम0, 6 ओल्ड मसूरी रोड,	26.06.2011	Jun-12	350
UKY 91	वी0पी0 शर्मा	9/4 ए, चमन विहार, निरंजनपुर,	17.08.2012	Sep-13	250
UKY 97	मनीष माहेश्वरी	ग्राम व पो0ओ0 सतपुली,	13.06.2010	Jun-11	450
UKY 103	सुभाष गोयल	पीडी पुरूषोत्तम टण्डन मार्ग लक्ष्मण चौक देहरादून	13-09-2012	Sep-13	250
UKY 104	धीरेन्द्र कुमार गॉधी	229 / ए राजेश्वर नगर, पो.ओ. गुजराडा,	15-09-2012	Sep-13	250
UKY 105	दिनेश चन्द्र श्रीवास्तव	24 / 1 लीटन रोड, (सुभाष रोड)	23.06.2011	Jun-12	350
UKY 108	सुभाष गोयल	द्वारा मोहनलाल एण्ड कं0, आढत बाजार,	23.02.2011	Feb-12	350
UKY 110	श्री आदर्श कुमार अग्रवाल	2 चमन विहार पो0 ओ0 माजरा जिला	22.05.2011	Mar-12	350
UKY 113	सुखपाल आर्य शास्त्री	ग्राम शमशेर गढ	16.10.2011	Apr-13	250
UKY 115	सावित्री चौधरी	140/61 बी वर्मा क्वाटर्स पार्क रोड	23.04.2011	Mar-12	350
UKY 117	राजपाल सिंह वर्मा	भानियावाला, डोईवाला	30.11.2011	Nov-12	350
UKY 119	डा0 रेनुका प्रकाश	27–वनस्थली बल्लूपुर कैनाल रोड़ देहरादून	5/12/2013	Nov-14	300
UKY 123	श्री नानक चन्द	लालबहादूर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी	27.01.2012	Dec-13	250
UKY 126	जगमेहर सिंह शर्मा	म0नं0 199 टोंस कालोनी, , डाकपत्थर	24.02.2011	Feb-12	350

Custmer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
UKY 127	भवन्ती उपाध्याय	ग्रम एवं पो0 नेहरू ग्राम	24.02.2011	Feb-12	350
UKY 128	राकेश भाटिया	अल्फा पैकिंग, डी–8 गवर्मेन्ट इन्ड्रस्ट्रिएल एरिया, पटेल नगर	23.10.2012	Oct-13	250
UKY 132	इंजी0 जे0 एस0 मित्तल	म.नं. 101 फेज–1, वसन्त विहार,	27.02.2011	Feb-12	350
UKY 133	योगेम्बर सिंह लिंगवाल	129 सोसाइटी ऐरिया, कलेमेन्टाउन, देहरादून	25.09.2012	Mar-13	250
UKY 137	अखिलेश तिवारी	मयुर विहार, सहत्रधारा रोड,	10.03.2011	Mar-12	350
UKY 138	ओम् प्रकाश अग्रवाल	9 बाबुगंज (दर्शनी गेट) द्वारा बसन्त वैन्चर	10.03.2011	Mar-12	350
UKY 139	भूतपूव सू0 मेजर एस0पी0 सिंह चौहान	ग्रामी ग्रान्ट पो0ओ0 बनजारावाला निकट चन्द्रवन्दनी मन्दिर,	13.03.2011	Mar-12	350
UKY 143	नीरज कुमार	पुत्र श्री राजपाल सिंह ग्राम व पो0 बुडपुर नूरपुर, छबरेहा	04.03.2011	Mar-12	350
UKY 144	यशप्रीत सिंह	पुत्र श्री महेन्द्र सिंह, ग्रम कुंरड़ी डाकघर मंगलोर	04.03.2011	Mar-12	350
UKY 145	आजाद वीर सिंह	ग्राम व पो0 लिव्वारेडी	04.03.2011	Mar-12	350
UKY 146	अरूण कान्त	पुत्र श्री किलुराम अधि"ाशी अभियन्त 28/2 पथरी बाग	23-12-2013	Jan-14	300
UKY 159	श्री अनिल धीमान	183 टाईप 3, सैक्टर 5 बी बी एच ई एल ,	14-10-2013	Oct-14	300
UKY 160	श्रीमती सुधा महेश्वरी	1/14 आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर	17-6-2013	Jun-14	300
UKY 162	श्री प्रदीप भार्मा	द्वारा एन0एस0 रावत, ग्राम लक्ष्मणपुर, पो0 कलालघाटी, कोटद्वार, जिला–पौडी	04.03.2012	Mar-12	300
UKY 166	श्री रवीन्द्र पुडीर जी	98 टी.एच.डी.सी. देहराखास	20-4-2013	Apr-14	300
UKY 169	सुबेदार इन्द्रा सिंह	म.न.173 लेन न.12 टर्नर रोड़ क्लैमनटाउन	18-5-2013	May-14	300
UKY 173	श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल	म.न–654 स्ट्रीट न–4, लेन न–8, राजेन्दर नगर	14-4-2013	Apr-14	300
UKY 175	श्रीमती निशा कन्सल	कन्सल प्रिन्टर (सुमित्रा सदन) मल्लीताल	13-5-2013	May-14	300
UKY 176	राजीव वर्मा,	बी–205, मधुसुधन, मधुर जीवन कॉम्पलेक्स, गोलमुरी, जमशेदपुर	14.10.2011	Dec-12	350
UKY 177	श्रीमती सरोज आर्य	वेद सदन–512 आर्यनगर ज्वालापुर	20.05.2012	Mar-13	250
UKY 179	जगपाल सिंह आर्य	गाव मन्ना खेड़ी डा. मंगलौर	23-10-2013	Oct-14	300
UKY 180	नरेन्द्र कुमार गुप्ता	62/1–अ सेवक आश्रम रोड निकट वैश्य नर्सिग होम	23-10-2013	Oct-14	300
UKY 181	महेश चन्द्र	चमनपुरी पटेल नगर	24-10-2013	Oct-14	300
UKY 184	मंगत राम बिलास	ग्राम मांदलिया पटटी पिंगला पाखा पो.बौन्दरखल	27-10-2013	Oct-14	300

पवमान पत्रिका के उत्तर प्रदेश के वार्षिक ग्राहकों की सूची जिनके द्वारा 2015 तक का शुल्क जमा नहीं किया गया है

Custmer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
UPY 1	अरविन्द कुमार आर्य	पुत्र श्री राम नाथ, ग्राम एवं पोस्ट इस्लामनगर,	11/8/2011	Aug-12	350
UPY 2	सन्तोष कुमार	सी–54 /ए, फ्लैट नं., 805–बी, रॉयल टॉवर, सेक्टर–61,	12/8/2011	Aug-12	350
UPY 3	महेन्द्र कुमार	स्पार्क बैटरी, 270 नोर्थ, सिविल लाईन, अन्डर भोपा रोड, रेलवे ब्रिज,	25-4-2013	Apr-14	300
UPY 4	सोमपाल सिंह आर्य	म.नं. 210 पटेलनगर, नई मण्डी	22.11.2011	Nov-12	350
UPY 5	तेज पाल सिंह	1158–ग्रीन फिल्ड इंटर कालेज, सूरज विहार,	24-11-2013	Nov-14	300
UPY 6	विक्रम सिंह	पुत्र श्री रघुवीर सिंह ग्राम व पोस्ट उमाही कला,	19-10-2012	Oct-13	250
UPY 7	महेश सिंह आर्य	प्रधान आर्य समाज, ग्राम व पोस्ट जरौली कला,	20-6-2014	Jun-15	150
UPY 8	मुनि जी	वेद मन्दिर वैदिक साधन आश्रम, ग्राम गोतमपुर, पोस्ट उझियानी,	16.06.2011	Jun-12	350
UPY 9	विजय पाल	डी.एस., भवन पोस्ट बॉक्स नं 7, बडोत	19.06.2011	Jun-12	350
UPY 10	विवेक वरना	फ्लैट न. 4041 सैक्टर 4–अ वसुन्धरा	20-10-2012	Oct-13	250
UPY 11	वंश गोपाल ओमर	138 ऋतम शिशु शिक्षण संस्थान के सामने धर्मशाला मार्ग	29.06.2012	Jun-13	250
UPY 12	अमित श्रीवास्तव	138 ऋतम शिशु शिक्षण संस्थान के सामने धर्मशाला मार्ग	5/7/2013	Jun-14	300
UPY 14	अनेर सिंह यादव	प्रबन्धक वीणा वादिनी इण्टर कालेज, गांधीनगर	09.10.2011	Oct-12	350
UPY 15	रविन्द्र कुमार शर्मा	रामा एग्रीकलचर, इण्ड्स्टीज,, एम.एस.के. रोड शामली	08.06.2010	Jul-12	350
UPY 16	कौशल सिंह नागर	गांव डेरीन गुजरान, पो0 दनकोर,	12.10.2011	Oct-12	350
UPY 18	वेद प्रकाश आर्य	द्वारा पांतजलि चिकित्सालय तिलक मार्केट इटा रोड	28.05.2011	Dec-12	350
UPY 21	राज कुमार भाटी	पुत्र चौ0 करन सिंह, गॉव चिढ़हरा, पोस्ट दादरी,	detail not available		350
UPY 23	एस.सी. गोविल	चेयरमैन, आभा मानव मन्दिर, मनीष गोविल मेमोरियल ट्रस्ट, पंचवटी कालोनी, मवाना रोड द्वारा आचार्य आशीष तपोवन आश्रम,	21.10.2011	Oct-12	350
UPY 25	डॉ0 राजेश कुमार आर्य	पुत्र श्री नाथीराम सैनी, ग्राम मउद्दीनपुर, पो0ओ0 दौराला	19-2-2013	Feb-14	300
UPY 26	पी. के. अग्रवाल	18– पन्त विहार, आई.टी.सी. रोड,	05.12.2011	Dec-12	350
UPY 27	श्री नन्द किशोर मिश्र जी	सिसवॉ तहसील–सोरांव	10/4/2014	Apr-15	150
UPY 28	देवेन्द्र नाथ	जगन्नाथ हाउस (पटेल धर्मशाला के पीछे) कुर्मी कालोनी, पटेलनगर	18.04.2011	May-12	350
UPY 29	बांके बिहारी	आर्य समाज (सुभाष नगर) 33– ए, सिविल लाईन	29.07.2011	Jul-12	350

Customer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
UPY 30	श्री महावीर प्रसाद सैनी	म.नं.–2–बी/1683 बसन्त विहार	27-2-2014	Feb-15	150
UPY 32	सुभाष आर्य	कैलाश इंजीनियरिंग, रोडवेज के सामने, शामली	12.03.2012	Mar-13	250
UPY 33	वीरेन्द्र परिव्राजक	पातंजल योग संस्थान, 5 / 15 विकासनगर,	25-8-2014	Aug-15	150
UPY 34	श्री योगेश कुमार आर्य जी	नौरंगपुर पो.रामपुर मनिहारान	27-02-2015	Feb-15	150
UPY 35	सत्येन्द्र कुमार भाँती	राजीव गाँधी नगर, फरूखाबाद	25-4-2013	Apr-14	300
UPY 36	ब्र0 ज्ञान प्रकाश	पिता द्वारिका सिंह आर्य, ग्राम सहतवार, दक्षिण टोला	22.03.2012	Mar-14	300
UPY 38	ब्रजपाल सिंह लाम्बा	ग्राम निरपुडा, पो0ओ0 वाया टीकरी	19.04.2011	May-12	350
UPY 39	एस.के. गुप्ता	41– विकास विहार, ओल्ड मोहनपुरी, विकास प्राधिकरण के समीप,	21-8-2014	Aug-15	150
UPY 40	देवेन्द्र कुमार धीमान सन आफ मोहर सिंह धीमान	भीमपुरा, शामली	27-7-2014	Jul-15	150
UPY 41	श्री रमेश चन्द्र	ग्राम सुहागपुर, धामपुर	18.05.2012	May-14	300
UPY 42	रामदेव कपूर	सी–1 / 85 ए, एफ–1,डी.एल.एफ., दिलशाद एक्सेटेशन–2, भोपुरा, साहिबाबाद	20.04.2010	Apr-12	350
UPY 43	प्रवीण कुमार	पुत्र श्री महकार सिंह, ग्राम घाट, पो0 ओ0 पांचली,	15.04.2012	May-13	300
UPY 44	श्री रामपाल फोजी आशीष	डाक फंदपुरी	14.06.2011	May-13	250
UPY 45	सत्यपाल सिंह वर्मा	तहसील रोड, नन्ही दुनिया स्कूल, मवाना	03.01.02012	May-13	250
UPY 46	लक्ष्मण प्रसाद आर्य	13 / 399 इन्द्रानगर,	29-4-2014	Apr-15	150
UPY 47	श्री योगेन्द्र पाल	पुत्र श्री हरी सिंह ग्राम माज़रा उमाही कला	08.06.2010	May-12	350
UPY 48	त्रिलोक चन्द आर्य	कैलाश इंजीनियरिंग, रोडवेज के सामने, शामली	19.05.2012	Jun-13	250
UPY 49	भोज देव मुदित	133/646 नयापरवा मनोरमा मार्बल (मार्बल मार्किट), पो.टी.पी नगर	27-6-2014	Jun-15	150
UPY 50	श्री सत्य मुनि,	ग्राम शेरपुर, पोस्ट– मालवीय नगर,	20.05.2013	Jun-13	250
UPY 52	आभा रस्तोगी,	5/1154 वसुन्धरा (मोहन मैकिनस सोसाइटी)	18.05.2012	Jun-14	300
UPY 53	गिरधारी लाल आर्य	पूर्व पार्षद, सराय काबा, तुर्कमान गेट,	6/6/2014	Jun-15	350
UPY 54	श्री दाऊ दयाल पौरष,	ए– 69 शान्तिनगर (भूड का बाग)पो0ओ0 कमलानगर,	detail not available		350
UPY 56	पवन कुमार विश्नोई	म.नं. 779, पंजाब ट्रैक्टर वाली गली, दयानन्दनगर, शामली,	18.05.2012	Jun-13	250
UPY 58	श्री योगेश वर्मा,	अनमोल भवन, भारत बीज भण्डार, चनडूवा सती, विद्यापीठ रोड, वाराणसी	22.04.2011	May-12	350
UPY 59	वी.आर. शर्मा	म.नं. 178 नानक गंज, सिपरी	22.07.2011	Jul-12	350
UPY 60	आदित्य प्रकाश गुप्त	प्रधान आर्य समाज, खेडा अफगान	30-1-2014	Jan-15	150
UPY 61	सरोज वैश्य	ए–78 प्रिन्स रोड, गांधीनगर,	28-4-2014	Apr-15	150
UPY 62	आर.सी. शर्मा	सी– 183 पॅकेट– 7 के.वी. द्वितीय, सेक्टर–82,	11.05.2012	May-13	250
UPY 63	कालू सिंह	महर्षि दयानन्द मानव कल्याण संस्थान, गॉव खरड	22.04.2011	May-12	350
UPY 64	आर्य समाज	सिकन्दरा राऊ, जिला हाथरस (उ0प्र0)	30.04.2011	May-12	350
UPY 65	राम गोविन्द ठाकुर	332 / 5 सी, अमरपुर, सोसाइटी, इन्दिरानगर	13.03.2011	Apr-12	350
UPY 66	राज किशोर मास्टर उपाध्याय	विश्वकर्मा बस्ती गली न0 3 सीकरी फाटक, मोदीनगर	8-Oct-14	Oct-15	150
UPY 68	सुबोध सागर जौहरी	ए–1870 आवास विकास,	11.06.2011	May-12	350
UPY 69	सोम प्रकाश शर्मा	वजीर बिहार कालोनी, सत्या आई0टी0आई के पास	18.02.2012	Jan-13	250
UPY 70	कु. अन्नु सैनी,	पुत्री श्री सुभाष सैनी, ग्राम बलवन्तपुर, डाकघर सरसावा,	18.06.2012	Jun-13	250
UPY 71	कु. मीनू आर्य,	पुत्री श्री कंवर पाल सैनी, ग्राम महोदीनपुर, डाकघर घोसला,	18.06.2012	Jun-13	250
UPY 72	श्रीमती सुशीला शर्मा	बी– 501, रिवेरा, एल.डी.को., ग्रीन मिडोज, सेक्टर–पी–1,	02.02.2012	Jan-13	250
UPY 74	लाल मणि आर्य,	आर्य समाज, दोहरी घाट, आजमगढ रोड,	15.07.2012	Aug-13	250
UPY 75	अजय कपूर	फ्लैट सं. 304, अरिहन्त रेजीडेन्सी अहिंसा खण्ड–2, इन्द्रापुरम, निकट शान्ति गोपाल हॉस्पीटल,	31-10-2013	Oct-14	300
UPY 76	गिरिश मुनि	जे0–142, विजयनगर, सैक्टर–12, प्रताप बिहार	23.06.2010	Nov-11	350
UPY 77	सन्तराम, पोस्ट मास्टर	गांव व पो.ओ. रसुलपुर, लिल्हा,	20.03.2012	Mar-13	250
UPY 78	सतेन्द्र तोमर,	पुत्र श्री निरंजन सिंह, ग्राम व पोस्ट बासोली,	09.07.2012	May-13	250
UPY 79	अंगिरस मुनि	म0न0 9/284 खतरागढी पटटी मीरापुर बड़ौत	15-9-2012	Sep-13	250
UPY 80	श्रीमती अर्चना गुप्ता बध्व दिनेश गुप्ता	डिप्टी कमीश्नर कार्यालय वाणिज्य कर निभूति खण्ड मुख्यालय वाण्ज्यि कर गोमतीनगर	15-9-2013	Oct-13	250
UPY 82	विनोद कुमार वर्मा लालाराम वर्मा	मो0 दिलाशर गंजे पीपल वाली गली	20-09-2012	Sep-13	250
UPY 83	विजय पाल	डी.एस., भवन पोस्ट बॉक्स नं 7, बडोत	25.09.2012	Sep-13	250
UPY 84	श्री संजीव कुमार जनेश्वर सिंह	ग्राम पंजोखड़ा प्राथमिक विद्यालय डाक काँधला जिला	25.09.2013	Oct-13	250
UPY 85	विजय कुमारी यश पाल	चुर बेरी	15-11-2012	Nov-13	250
UPY 86	उदय चन्द्र जिन्दल	बी–94 सैक्टर 40 नोयडा	22-11-2012	Nov-13	250
UPY 87	अजय कुमार	673/6 शास्त्री नगर नई सड़क मेरठ	25-12-2012	Dec-13	250
UPY 88	शैलेन्द्र जौहरी ऐडवाकेट	455 धर्म सिह वाली गली साठा	2/1/2014	Jan-15	150
UPY 89	संजय कुमार दुबे	ग्राम रेडिया पो0 विरोटा पवी नगर औरंगाबाद	30-12-2012	Dec-13	250
UPY 90	संजय कुमार शर्मा	चन्द्र विहार कालोनी गंगोह रोड़ पंचायती धर्माशला के सामने	12/1/2013	Jan-14	300
UPY 91	श्री राकेश कुमार`ध्व	श्री श्याम लालग्राम व पोस्ट इस्लामनगर	30-1-2014	Jan-15	150
UPY 91	श्री शशी कान्त तिवारी	गाव व डाक–संग्रामपुर पूर्वी चंपारण	30-1-2014	Jan-15	150

Customer no.	नाम	पता	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
UPY 93	श्रीमती कृष्णा कपुर	402/10 प्रेमगंज सीपरी बाजार झांसी	30-3-2013	Mar-14	300
UPY 96	श्री राम	निवास कौशिक म.न.100 अल्क नन्दा धाम कालोनी गंगानगर	25-5-2013	May-14	300
UPY 97	मुनि मोल्हड सिंह आर्य	रामपुर मनीहारान	1/11/2014	Nov-15	150
UPY 98	आरती	पुत्री श्री सुरेश पाल टाँडा मान सिंह टाँको सुन्दर पुर	19-3-2014	Apr-14	300
UPY 100	मुरली धर गुप्त	ए / 153–54 आवास विकास कालोनी, प्रहलादपुरी,	20.09.2012	Sep-14	300
UPY 101	ओम पाल आर्य	गॉव सतपुरा डाकघर कुरडीखेडा	11.05.2014	May-15	150
UPY 102	श्रीमती रजनी वर्मा	म.न–179 सैक्टर 15–अ	detail not available		300
UPY 104	राम पाल सिंह काकरान	पुत्र श्री निरंजन सिंह, ग्राम व पो0 बासोली	04.03.2011	Mar-12	350
UPY 105	श्री पी0 के0 रस्तोगी	म.नं. डी / एच– 12 पलव पुरम, फेज–2,	10.03.2011	Mar-12	350
UPY 107	बैध राज	पिया क्लाथ हाउस, कोटला बाजार, चाँदपुर स्याऊ	13.03.2011	Mar-12	350
UPY 108	आचार्य हुकुम सिह भारती	भारती ज्ञान विद्या मंदिर लोहियानगर बलकेशवर	7/5/2014	May-15	150
UPY 109	सल्लू सिह	ग्राम तिरोला डा0 राजपुर कला जानसट्ठ	28-7-2014	Jul-15	150
UPY 110	ओ0पी0 आर्य	एफ–9 प्रोफेसर कालोनी बाईपास रोड़ कमलानगर आगरा	13.10.2012	Oct-13	250
UPY 111	चन्द्र गुप्त आर्य	चप्पल हाउस गलि मनिहारान	25-10-2013	Oct-14	300
UPY 112	राजाराम	एण्ड कमपनी गली गलि मनि हारान	13-10-2012	Oct-13	250
UPY 113	जगदीश चन्द्र	एफ–ई.58 नया कविनगर	12/10/2014	Oct-15	150
UPY 114	श्री आर्य समाज	डी 181–गोविन्द पुरम	26-10-2014	Nov-14	300
UPY 115	आचार्य रणधीर शास्त्री	427/2 जागृति विहार	10/11/2012	Nov-13	250
UPY 116	डा0 वीरेन्द्र त्यागी	त्यागी नर्सिग होम पास मंगलौर पुलिस चौकी के पास देवबन्द	6/3/2013	Mar-14	300
UPY 117	श्री उमेश कुमार शर्मा जी	सुरेन्दर कुमार गोव व डाक बी.बी नगर जिला	7/5/2015	Apr-15	150
UPY 118	शिवराज चौहान	ग्राम पो0 बसेड़ा जिला	19-3-2013	Mar-14	300
UPY 120	श्री प्रवेश कुमार सन आफ	श्री मेहर सिंह (मास्टर जी) ग्राम –बौन्सा डा–सौराना जनपद	30-4-2014	Apr-15	150
UPY 121	श्री अशोक चौहान	नसरूल्ला गढ़ नकुड़ शिव मंदिर के पास	17-6-2013	Jun-14	300
UPY 122	श्री ब्रहम सिंह राठी	केयर आफ क्षेष्ठ होमयोपैथिक हॉल पुराना डाकखाना रोड़ धीमान पुरा	12/8/2013	Aug-14	300
UPY 123	सदोरोमल खुबाणी	s/o बखरमल खुबाणी ब्लाक ए/55 फलैट न.101 शालीमार ग्रार्डन एक्स–2 एस.एम वर्ल्ड साहिबाबाद	13-6-2013	Jun-14	300
UPY 124	श्री दुष्यन्त प्रकाश आर्य	(एडवोकेट) ग्रा. सगूना पो.दानापुर कैण्ट पटना	4/5/2013	May-14	300
UPY 125	डा. विश्वनाथ मिश्रा	झिनगा जिला सरावृष्टी	11/4/2013	Apr-14	300
UPY 126	डॉ0 वी.के. गुप्ता	जे–5/5 डी.एल.एफ सीटी फेज–2	10/6/2013	Jun-14	300
UPY 127	कृ.सर्वेस राजपूत जी	केयर आफ श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री जी म.न–266/13 गली विजयनगर सब्जीमण्डी ऐटा	15-4-2014	Apr-15	150
UPY 128	चिन्तन मुनि	प्रधान आर्य समाज ग्रा.पो–असदपुर तहसील गुन्नौर जनपद	15-4-2012	Apr-14	300
UPY 129	सुदेश कुमार भाटिया,	जय अम्बे सिन्थेटिक जैमित्रा मार्केट, चित्राटोली रोड, पो.ओ. आरा,भोजपुर	14-7-2013	Jul-14	300
UPY 131	संजय शर्मा	19/324 सत्यम् खंड सैक्टर–19 वसुन्धरा,	11-Sep-13	Sep-14	300
UPY 132	तेजपाल सिंह सन आफ	विजय सिंह दाता गॉव पिंडौरा	24-10-2013	Oct-13	250
UPY 133	श्री ओमवीर सिंह	ग्राम–नवदिया, पोस्ट मिलक जिला	26-10-2013	Oct-14	300
UPY 134	श्री देवेन्द्र गुप्ता	ग्राम भिष्मनगर (भैसा) पो.ओ.भवाना जिला	26-10-2013	Oct-14	300
UPY 135	शिव कुमार शर्मा ओ3म	महर्षि दयानन्द संस्कृत गुरूकुल महाविद्यालय पटेल मार्ग	26-10-2013	Oct-14	300
UPY 136	श्री कमल अग्रवाल	s/o धनश्याम अग्रवाल पो.ओ–मिलक जनपद रामपुर	27-10-2013	Oct-14	300
UPY 137	विकास आर्य	गाव व डाक–हरपाल	26-11-2013	Oct-14	300
UPY 138	श्री रोहताश कुमार	मढीनाथ हनुमान गढी	21-01-2014	Oct-14	300
UPY 139	श्री जय प्रकाश आर्य केयर आफ	पोथी राम ग्रा.व पो–मुहम्मद नगर जिला सुल्हरा	7/3/2014	Oct-14	300
UPY 140	श्री सुरेश चन्द्र शास्ती जी	म.न–266/13 गली विजयनगर सब्जीमण्डी ऐटा	15-4-2014	Oct-14	300
UPY 141	श्री संतोष मलिक जी	चौधरी मेडिकल स्टोर रोहटा रोड़ शान्तिकुंज	17-4-2014	Oct-14	300
UPY 142	श्रीमती प्रकाशवति आर्य	वी.के इन्जीनियरिंग हनुमान रोड शामली	8/5/2014	Oct-14	300
UPY 143	श्री बृजपाल शर्मा जी	न्यू कालोनी नियर सिण्डीकेट बैक गली नं–1 मेरठ रोड़	9/5/2014	Oct-14	300
UPY 145	श्री शम्भू नाथ गुप्ता जी	45–जसवन्त की छतरी लोहियोनगर बलकेश्वर	11/5/2014	May-15	150
UPY 146	श्री प्रहलाद सिंह जी	सन् आंफ श्री ओम सिंह काम्बोज कालोनी निकट डा0 कुलदीप सक्सेना म.न–469	17-5-2014	May-15	150
UPY 151	श्रीमती सुषमा राठौर	बध्व अजीत सिंह राठौर ए–704 आफिसर्स कालोनी लालाबाग	26-6-2014	Jun-15	150
UPY 152	चौधरी महाराणा सिंह	गांव–अमशाह,पो.ओ.सुन्दरी तह0 नबाबगंज, जिला	26-6-2015	Jul-15	150
UPY 153	श्री चन्द्रज सिंह जी	ग्रां व पोस्ट–गौरा रघुवर जिला	28-6-2014	Jun-15	150
UPY 154	श्री राकेश राठी	म.नं–581/4 भर्तिया कालोनी निकट बालाधाम मंदिर	28-6-2014	Jun-15	150
UPY 155	श्री निमेश मदेशिया सन् आफ	श्री केदारनाथ ग्रा.व.पो–शाहगढ़ जिला	29-6-2014	Jun-15	150
UPY 156	श्री रामअवतार वर्मा	ग्रा.व पो–वलीदपुर	29-6-2014	Jun-15	150

De Bono

Saturn Series

CPU Holder

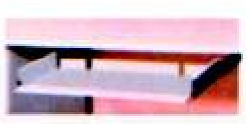

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

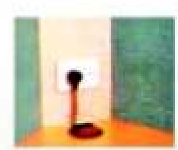

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary. Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाष: 0124–2341001, 4783000, 4783100

प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाष: 0124–4783000, 4783100

प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री